Nov
2024

मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

आज वह कल हमारी बारी है

"इस्लामी दुनिया जिसके मुल्कों को हम आज़ाद समझते रहे हैं, अस्ल में आज़ाद नहीं हैं। हर मुल्क किसी न किसी बड़ी ताक़त से जुड़ा हुआ है, लेकिन ज़्यादा अफ़सोस की बात यह है कि वह ज़रूरत से ज़्यादा वफ़ादारी करने की कोशिश करता रहा है जो ग़ैरत व सम्मान के ख़िलाफ़ बल्कि मुल्क के व निजी समझौते के भी ख़िलाफ़ साबित होता रहता है। फ़िलिस्तीनियों को ख़त्म करने के बाद आस-पास के मुल्कों की सलामती का क्या एतबार रह जाता है, एक के बाद दूसरे नुक़सान में आ सकते हैं।"

मुर्शिदुल उम्मत
हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी रह०

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल नदवी
दारे अरफ़ात, तकिया कलां, रायबरेली

मसला-ए-फ़िलिस्तीन - ब्रिटेन के दस्तावेज़ों की रोशनी में

“10.08.1840 को ब्रिटिश प्रधानमंत्री पामर्स्टन ने तुर्की में तैनात ब्रिटिश दूत को एक ख़त भेजा कि:

“यूरोप के अलग–अलग शहरों में रहने वाले यहूदियों में यह एहसास बढ़ गया है कि अब फ़िलिस्तीन में अपना वतन क़ायम करने का वक़्त क़रीब आ गया है और यह अच्छी तरह मालूम है कि यूरोप के यहूदी बड़े दौलतमन्द हैं, लिहाज़ा जब यहूदी क़ौम उस्मानी बादशाह की सरपरस्ती और हिमायत में फ़िलिस्तीन वापस आ जाएगी तो यह मुहम्मद अली और उनकी जानशीनों के ख़तरनाक प्लान के अमल में लाने के रास्ते में रूकावट बनेंगे और तुर्की हुकूमत भी इस को मसला–ए–फ़िलिस्तीन के हक़ में फ़ायदेमन्द समझती है कि इस तरह के एक मामूली क़ानून के ज़रिये वह बहुत से मुल्कों में अपने हिमायती और दोस्त हासिल कर सकती है।”

1861ई0 में ब्रिटिश लेखक थॉमस क्लार्क ने अपनी किताब “हिन्दुस्तान और फ़िलिस्तीन” में लिखा कि:

“अगर यहूदी क़ौम को दोबारा खड़ा कर दिया जाए तो क़रीब है कि बनी इस्राईल में बेदारी और हरकत पैदा हो जाएगी और उससे सबसे ज़्यादा फ़ायदा हम ही को हासिल होगा। यह यक़ीन रखना चाहिए कि फ़िलिस्तीन में यहूदी वतन का क़याम (स्थापना) बेहद ज़रूरी है, अगर ब्रिटेन व्यापार को अपनी रीढ़ की हड्डी समझता है और उसे मालूम है कि व्यापार तीन कान्टिनेन्ट से होकर गुज़रता है और उसे यह भी मालूम है कि यहूदी बुनियादी तौर पर साहूकार और व्यापारी क़ौम है तो उसे अपने व्यापार की उन्नति और बढ़ावे के लिए बनी इस्राईल को फ़िलिस्तीन में बसाना इन्तिहाई ज़रूरी है। नये सिरे से उन्हें उनकी क़ौमियत और उनका मुल्क वापस कर दिया जाए क्योंकि दुनिया की कोई ताक़त उसको उनसे नहीं छीन सकती।”

13.03.1916 को पूर्व रूसी राजधानी पेत्रोग्राद में स्थापित ब्रिटिश दूतावास ने रूसी विदेशमंत्री को एक ख़त लिखा था जिसमें फ़िलिस्तीन में यहूदियों को स्थापित करने से संबंधित रूस की राय जाननी चाही थी, इस ख़त में उसने साफ़ शब्दों में लिखा है कि इस वक़्त ब्रिटेन के बादशाह सलामत फ़िलिस्तीन में यहूदियों की स्थापना पर भरपूर तवज्जो दे रहे हैं, ख़त में पेश किया गया नुक़्ता–ए–नज़र अगर सही है तो ज़ियोनिज़्म के ज़रिये अहम सियासी नतीजे बरामद होंगे और सबसे बड़ा फ़ायदा यह होगा कि इस तरह पूर्वी और अमरीका के यहूदियों को अपनी दोस्तों की तरफ़ लाया जा सकता है।

20.04.1920 को जब मित्र देशों की कौन्सिल ने फ़िलिस्तीन में ब्रिटिश मैन्डेट को मंज़ूरी दे दी तो इस वक़्त शाहे ब्रिटिश ने यहूदियों के नाम एक पैग़ाम में कहा कि “तमाम मित्र देशों ने यह फ़ैसला और अहद कर लिया है कि सिलसिलेवार तरीक़े पर फ़िलिस्तीन में यहूदी देश की स्थापना को यक़ीनी बनाया जाएगा।”

हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद वाज़ेह रशीद हसनी नदवी (रह०)
(मसला–ए–फ़िलिस्तीन– साम्राज और आलमे इस्लाम: ३०–३२)

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

अंक: 11 नवम्बर २०२४ ई० वर्ष: 16

सम्पादक

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

सम्पादकीय मण्डल

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

अब्दुस्सुबहान नाखुदा नदवी

सह सम्पादक

मो0 नफ़ीस ख़ॉ नदवी

मुद्रक

मो0 हसन नदवी

अनुवादक

मोहम्मद सैफ़

राहे ख़ुदा में एक तीर की फ़ज़ीलत

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया:

"जिसने अल्लाह की राह में एक तीर भी मारा तो वह (सवाब के लिहाज़ से) एक गुलाम आज़ाद करने के बराबर है।"

(जामेअ तिरमिज़ी: 1638)

E-Mail: markazulimam@gmail.com www.abulhasanalinadwi.org

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल-नदवी दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली, यू0पी0.229001

मो० हसन नदवी ने एस० ए० आफसेट प्रिन्टर्स, मस्जिद के पीछे, फाटक अब्दुल्ला ख़ॉ, सब्ज़ी मण्डी, स्टेशन रोड रायबरेली से छपवाकर आफिस अरफ़ात किरण, मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल-नदवी, दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली से प्रकाशित किया।

Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi Samiti (Punjab National Bank) A/c No. 6127002100000339 (IFSC: PUNB0612700)

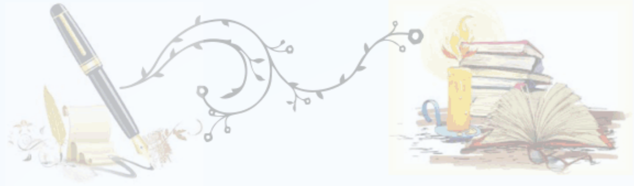

शहीद यहया सिनवार का पैग़ाम उम्मत के नाम

मुहम्मद ज़ाहिद हुसैन नदवी जमशेदपुरी

मरते–मरते किसी से सूद को गवारा न किया
जुज़–ए–खुदा के कभी ग़ैरों को इशारा न किया
जीते जी बस यही चाहा कि तेरा काम करूं
तेरी बख़्शी हुई हस्ती को तेरे नाम करूं
इब्तिदा खे़मे से की
जेल की तकलीफ़ झेली
फिर मुक़ाबिल हुआ पत्थर से
सुरंगें काटीं
वह काम आ ही गया
सर में सौदा जो समाया था
असा बन ही गया
ऐ मेरी मस्जिदे अक़्सा व मेरे पाक वतन
तेरी हुरमत ही की ख़ातिर मेरा लाशा यह कफ़न
मेरे जांबाज़ो!
मेरे शेरो जियालो!
सुन लो!
लैस हथियार से, हर लम्हा ज़िरह पोश रहो
अज़्मे फ़ारुक़ रखो
जज़्बा–ए–अय्यूबी भी
फ़तेह मुबीं फ़तेह मुबीं आयेगी।

इस अंक में:

ज़ुल्म की टहनी कभी नहीं फलती....................................3
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

हिम्मत तोड़ने वाले हालात और जीत की कुंजी..................4
हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह0)

फ़िलिस्तीन के झगड़े का पसमन्ज़र....................................6
हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

ग़ज़्ज़ा के लिए हमारी ज़िम्मेदारियां..................................8
मौलाना जाफ़र मसऊद हसनी नदवी

शहीदों का ख़ून इंशाअल्लाह बेकार नहीं जाएगा....................10
मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

मर्द–ए–मैदाँ – यहया सिनवार......................................12
मौलाना फ़ैसल अहमद भटकली नदवी

शहादत है मतलूब–ओ–मक़सूद–ए–मोमिन.........................13
मौलाना मुहम्मद सलमान बिजनौरी नदवी

वबाले दोश है सर जिस्मे नातवां पे मगर............................14
मौलाना मुहम्मद तारिक़ बदायूंनी

फ़िलिस्तीनी मसले का दीनी व ऐतिहासिक पसमन्ज़र..............15
मुहम्मद नजमुद्दीन नदवी

मंज़िल की जुस्तुजू है तो जारी रहे सफ़र............................17
मुहम्मद अरमुग़ान बदायूँनी नदवी

क्या हमास का क़दम खुदकुशी के बराबर था?......................19
मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

सम्पादकीय

ज़ुल्म की टहनी कभी नही फलती

● बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

ग़ाज़ा में जो कुछ हुआ और हो रहा है, मानव इतिहास के माथे पर वह एक बहुत ही बदनुमा दाग़ है, अब उसकी आग दूसरे देशों तक फैल चुकी है, इससे नज़र हटाकर कि मसला क्या है? ग़ौर किया जाए तो पूरी इन्सानी तारीख़ में ज़ुल्म व सितम की ऐसी भयानक दास्ताने शायद आंखों ने न देखी हों, वह भी लोकतन्त्र के इस दौर में। यक़ीनन मुलूकियत व बादशाहत के ज़माने में बहुत कुछ हुआ है, स्पेन में "फ्रेडेंड" ने पांच लाख लोगों को ज़िन्दा जला दिया, फिर विश्वयुद्धों में करोड़ों लोग मौत के घाट उतर गए, लेकिन इस जंग में जिस तरह बच्चों और औरतों को अंधाधुंध तरीक़े से क़त्ल किया गया, जिस्मों के परख्चे उड़ा दिये गए, अस्पतालों और रिफ़ाही इदारों (कल्याणकारी संस्थाएं) पर बमबारी की गई, इसकी मिसालें मुश्किल से मिलेंगी, फिर इस पर यह कि आतंकवाद के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाने वालों बल्कि उसके ध्वजवाहक समझे जाने वालों ने आतंक के सारे रिकार्ड तोड़ दिये।

अफ़सोस है उन अरब देशों पर जो खुले तौर पर न सही पर्दे के पीछे भी बहुत कुछ कर सकते थे। वह ऐश व अय्याशी की महफ़िलें सजा रहे हैं, एक तरफ़ उनके भाई–बंधु दाने–दाने को मोहताज हैं तो दूसरी तरफ़ नाच–गाने की महफ़िलें सज रही हैं, फ़िल्मों की दुनिया बसाई जा रही है। (فإلى الله المشتكى وهو المستعان!)

यहूदियों की शातिराना चालों को शायद दुनिया भूलती जा रही है। इन्सानी दुनिया के लिए वह कभी भी किसी नासूर से कम नहीं रहे। दुनिया के अलग–अलग देश जब उनसे आजिज़ हुए तो उनको फ़िलिस्तीन में लाकर मुसलमानों के सर थोप दिया गया। अमरीका आज उनकी गुलामी कर रहा है और उसके पहले क़ानून निर्माता ने जो कहा था वह एक हक़ीक़त की शक्ल में सामने है कि अगर यहां यहूदी आबाद हुए तो वह दिन दूर नहीं कि यहां के लोग उनकी गुलामी करेंगे।

यहूदी प्रोटोकॉल से साफ़ ज़ाहिर होता है कि वह सारी दुनिया को अपना गुलाम समझते रहे हैं और इसीलिए हमेशा उन्होंने ऐसे उपाय किये जिनके नतीजे में लोगों की योग्यताएं ख़त्म हो जाएं और दिमाग़ बेकार हो जाएं। अफ़सोस है उन इन्सानों पर जो इन्सानियत की डगर भूल गए और ख़ुदगर्ज़ी की आग आज नहीं तो कल ख़ुद उनको खाने के लिए तैयार है।

दुनिया को होश के नाख़ून लेने की ज़रूरत है। जो आग भड़काई गई है, अगर उसको ठंडा न किया गया और इन्सानियत की खेती उसी तरह झुलसती रही तो आने वाला कल इन्तिहाई ख़तरनाक होगा। अमन व शांति का पाठ पढ़ाने वालों को अपनी आस्तीन में झांककर देखना चाहिए कि वह क्या कर रहे हैं और किसके लिए गड्ढा खोद रहे हैं, कल उसी गड्ढे में ख़ुद उनको न गिरना पड़े, फिर कोई पूछने वाला न रहे।

ज़ुल्म की टहनी कभी फलती नहीं
नाव काग़ज़ की सदा चलती नहीं

हिम्मत तोड़ने वाले हालात और जीत की कुंजी

मुफ़क्किर–ए–इस्लाम हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह0)

आज हम मुसलमानों और अरबों को चाहिए कि हम इस अख़्लाक़ी जुर्रत व आली हिम्मत के साथ जो हमारी तारीख़ी रिवायत के बिल्कुल मुताबिक़ है अपना सफ़र नये सिरे से शुरू करें।

हमको अब हिम्मत करके इस बात को मान लेना चाहिए कि ज़ुल्म का अंजाम बहरहाल बुरा है और जिस रास्ते को अरबी दुनिया की राजतन्त्र व पूंजीवादी ताक़तों ने अपने लिये पसंद किया है वह देश व नस्ल दोनों के लिये तबाही है, न वह इस्लाम से मेल खाता है, न इन्सानियत से, न वास्तविक आज़ादी से उसका ताल्लुक़ है, न डेमोक्रेसी व बराबरी से!

हमको यह महसूस करना चाहिए कि किसी क़ायद (नेता) या अमीर की अंधी और मुतलक़ तक़लीद और भलाई व बुराई और गुनाह व सवाब हर चीज़ में उसकी फ़रमाबरदारी बल्कि नख़रे उठाना उसको अपनी अक़्ल, अपनी रूह और अपने दिल व दिमाग़ पर माबूदों और बुतों की तरह मुसल्लत कर लेना और उसकी किसी हेर–फेर पर उससे कोई हिसाब न करना बल्कि उसको खुली छूट दे देना मुल्क और मुल्क के लोगों पर ऐसी मुसीबत ला सकता है जिसका अंदाज़ा भी हमारे लिये मुश्किल है।

हमें हिम्मत के साथ मानना होगा कि अरबों को अपने पुराने व हमेशा रहने वाले दीन (इस्लाम) पर नये सिरे से ईमान लाने की ज़रूरत है, उनको अपने नशात–ओ–ज़िन्दगी के सरचश्मा–ए–इज़्ज़त व सरबुलन्दी के राज़ व अपनी जीत की कुंजी यानि मुहम्मत बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब अलहाशमी अलक़रशी (स0अ0व0) की ज़ाते गिरामी से इश्क़ व शेफ़्तगी की ज़रूरत है, जो उनके दिल व जिगर में उतर जाए और रग–रग में समा जाए, इसलिये कि अरबों, तुर्कों और सारी दुनिया के मुसलमानों की हयात व इज़्ज़त व आबरू आप (स0अ0व0) की हमेशा रहने वाली दावत, न ख़त्म होने वाली इमामत व क़यादत (नेतृत्व) और आप (स0अ0व0) की सुन्नत व तरीक़े के साथ जुड़ा हुआ है।

हमें इस हक़ीक़त को भी मान लेना चाहिए कि मुसलमानों और अरबों को वह ग़ैरमुल्की ताक़तें और सियासी मस्लहतें जो हवा के साथ चलती हैं और अपनी ग़रज़ व फ़ायदे के साथ बदलती रहती हैं, हरगिज़ कोई फ़ायदा नहीं पहुंचा सकतीं, इसलिये उनको सबसे पहले अल्लाह तआला पर भरोसा करना चाहिए और मांगने की ताक़त के बजाए अपने ईमान व यक़ीन, अपने अख़्लाक़ व किरदार, अपनी ख़ासियत व विशेषता और ताक़त व बाज़ू के ज़ोर से काम लेना चाहिए।

हमारे लिये ज़रूरी है कि हम सब व्यक्तिगत व सामूहिक रूप से पूरी ख़ुदशिकनी और अनाबत के साथ गिड़गिड़ाते हुए अल्लाह तआला की तरफ़ रुजूअ करें और इज्तिमाई (सामूहिक) तौर पर उसके सामने सच्ची तौबा करें और हर बाहरी ताक़त और बैरूनी मदद और ज़ाहिरी सहारों से अपने अलगाव का इज़हार करें और इस पर पूरा ईमान लाएं कि अल्लाह के सिवा कोई पनाह की जगह नहीं।

हमारा हाल उन लोगों की तरह न होना चाहिए जिनके बारे में अल्लाह तआला का यह इरशाद है:

"जब उन पर हमारा अज़ाब नाज़िल हुआ तो वह क्यों गिड़गिड़ा के हमारी तरफ़ रुजूअ न हुए बल्कि

उनके दिल सख़्त हो गए और शैतान ने उनके बुरे आमाल को उनके लिए मुज़य्यन कर दिया।"

(सूरह इनआमः 43)

बल्कि हमारा हाल उन लोगों से मेल खाना चाहिए जिनके बारे में अल्लाह तआला का इरशाद हैः

"जब ज़मीन अपनी वुसअत के बावजूद उन पर तंग हो गई और वह ख़ुद अपनी जानों से तंग आ गए और उन्होंने यक़ीन के साथ समझ लिया कि अल्लाह के मारे से पनाह बस अल्लाह ही के दामने रहमत में मिल सकती है (तो वह ख़ुदा के हुज़ूर में गिड़गिड़ाए) फिर अल्लाह ने उन पर इनायत फ़रमाई ताकि वह आइन्दा भी अल्लाह ही की तरफ़ रुजूअ करें, अल्लाह तआला बड़ा इनायत फ़रमाने वाला और बड़ा मेहरबान है।" (सूरह तौबाः 118)

इज्तिमाई (सामूहिक) और सच्ची तौबा हालात को बदलने और ख़ुदा की रहमत को जोश में लाने के लिए अजीब व ग़रीब तासीर रखती है। क़ुरआन मजीद में हज़रत हूद (अलैहिस्सलाम) की ज़बान से यह इरशाद हुआ हैः

"और ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अल्लाह से अपने गुनाहों की माफ़ी मांगो और उसकी तरफ़ रुजूअ हो जाओ, वह तुम्हारे लिये भरपूर बारिश नाज़िल फ़रमाएगा (जिससे तुम्हारी ग़िज़ाई मुश्किलें दूर होंगी) और वह तुम्हारी क़ूव्वत को अपनी ग़ैबी क़ूव्वत उसके साथ शामिल करके बढ़ा देगा और देखो मुजरिम बनकर उससे रूगरदानी न करो।" (सूरह हूदः 25)

हमको अब अल्लाह के साथ और उसके बन्दों के साथ अपना मामला ठीक करना चाहिए और जो ताक़तें और साधन अल्लाह ने हमको दिये हैं, उसका सही और जाएज़ इस्तेमाल करना चाहिए। हमें चाहिए कि अल्लाह से जंग और उसके रसूल के साथ दुश्मनी से बाज़ आएं और उसकी शरीअत व क़ानून की मुख़ालिफ़त छोड़ दें और इस्लाम में अपने पूरे वजूद और पूरी शख़्सियत के साथ दाख़िल हों, कामयाबी और इज़्ज़त व सरफ़राज़ी के हुसूल, ज़ालिम हुक्मरानों से ख़लासी और अपने ख़तरनाक दुश्मनों से छुटकारे के लिए इस अमल में जो तासीर है वह कम चीज़ों में है, अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता हैः

"अगर वह सही तरीक़े पर क़ायम रहते तो हम उनको भरपूर सैराबी बख़्शते।" (सूरह जिन्नः 16)

एक और जगह इरशाद हैः

"और अगर यह बस्तियों वाले ईमान और तक़्वे वाली ज़िन्दगी अख़्तियार करते तो हम उनके लिए ज़मीन व आसमान की बरकतों के दरवाज़े खोल देते।" (सूरह आराफ़ः 96)

ग़रज़ यह कि इन तारीक व हिम्मत तोड़ने वाले हालात के बावजूद मायूसी की कोई ज़रूरत नहीं। इतिहास गवाह है कि जब भी अरब दुनिया का कोई सितारा डूबा, दूसरा सितारा उभर कर उसकी जगह आ गया, जब भी उसका कोई हीरो पर्दे के पीछे चला गया, किसी दूसरे लीडर और नेता ने उसकी जगह संभाल ली, इसलिए कि अल्लाह को उसकी ज़िल्लत व रुस्वाई गवारा नहीं, उसकी ज़िल्लत तमाम मुसलमानों की ज़िल्लत है और उसकी रुस्वाई दुश्मनों की शमातत और जग हंसाई है, उसको गर्द–ओ–ग़ुबार झाड़कर नये सिरे से अपने सफ़र की शुरूआत करनी चाहिए और अपने अस्ल मक़ाम और उनकी सिफ़ात व ख़ासियत की तरफ़ फिर वापस लौटना चाहिए जिस पर हमारी आगे की कामयाबी का दारोमदार और अल्लाह की नुसरत का दारोमदार हैः

"और हिम्मत न हारो और रंज न करो और अंजामेकार तुम ही सरबुलन्द होगे, अगर सच्चे मोमिन हो, अगर इस जंग में तुम पर चोट पड़ी है तो दुश्मन क़ौम पर भी ऐसी चोट पड़ चुकी है और हम ज़माने की तारीख़ को इसी तरह अदलते–बदलते रहते हैं यानि कभी किसी क़ौम को फ़तेह कभी किसी को शिकस्त और इसमें बहुत सी हिकमतें हैं।"

फ़िलिस्तीन के झगड़े का पसमन्ज़र

हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी (रह0)

फ़िलिस्तीन की ज़मीन हमारे लिए कोई नई जगह नहीं है कि हम उसके साथ अपना ताल्लुक़ बताने के मोहताज हों, या हम उससे इस क़दर ग़ाफ़िल हों कि इसको समझना चाहें। सदियों मुसलमान हुकूमतों को इस मुबारक जगह की हिफ़ाज़त करने का शर्फ़ (सौभाग्य) हासिल रहा है और यह बात यक़ीनन गर्व की है। मुसलमानों से पहले इस जगह के दावेदार यहूदी, ईसाई रह चुके हैं, यहां उन्होंने सदियों हुकूमतें कीं, लेकिन मुसलमान क़ौम जब दुनिया में आई तो उसका आना मानो ऐलान था कि अब अल्लाह के घरों के पासबान अल्लाह की इत्तेबा करने वाले व फ़रमाबरदार बन्दे ही हो सकते हैं, बड़े–बड़े बातिल परस्त उनके लिए रास्ता छोड़ने पर मजबूर हुए और मुसलमानों ने सत्ता संभाली और उस इस्लामी केन्द्र की हिफ़ाज़त और पासबानी को अपना वतीरा बनाया। लेकिन यहूद व नसारा मुसलमानों की तौलियत से राज़ी न थे, बराबर कोशिश करते रहे कि उनके नापाक क़दम फिर इस बाबरकत ज़मीन पर पहुंच जाएं, लेकिन मुसलमान सुल्तानों ने उनको कामयाब न होने दिया। आख़िरी दौर में नसारा मुसलमानों की शिकस्त से मायूस और यहूद दुनिया में ज़लील व ख़्वार हुए। इधर आम बेदीनी और इल्हाद ने जब यूरोप को ज़ेर–ओ–ज़बर कर दिया और यहूदी क़ौम पूरे यूरोप में महकूर व ज़लील समझी जाने लगी और बहुत सी हुकूमतें (जैसेः पोलैण्ड, आस्ट्रेलिया, जर्मनी और क़ैसर के ज़माने का रूस) ने तो यहूदियों के लिए ज़मीन तंग कर दी। ग़ैर मुस्लिम दुनिया में मसाएल अब दीनी व मज़हबी नहीं रहे, बल्कि सियासी और माद्दी मक़ासिद के हुसूल तक महदूद रह गए, ऐसे हालात में भी जो यहूदी फ़िलिस्तीन में रहते थे वह दूसरे ग़ैरमुस्लिमों की तरह मुस्लिम हुकूमतों की अमान में आराम व आसाइश की ज़िन्दगी गुज़ारते रहे, उनकी तादाद पिछली सदी तक फ़िलिस्तीन में आठ हज़ार से ज़्यादा न थी, उसी तादाद से जिसका मुल्क में कोई वज़न महसूस नहीं किया जा सकता था, मुसलमानों को धोखा हुआ, यह उनकी नेक नियति थी कि दूसरी क़ौमों से अच्छा मामला करके यह समझते रहे कि उनकी तरह दूसरी क़ौमें भी उनके हक़ में शराफ़त का सुबूत दे सकती हैं और यहूदी भी एहसानशनास हो सकते हैं।

बहरहाल यहूदी जबकि तमाम दुनिया में मुसीबत व अदावत का शिकार हो रहे थे, फ़िलिस्तीन में मुसलमानों के दामने हुकूमत में आराम की ज़िन्दगी बसर करते थे, उन यहूदियों के लिए जब यूरोप की ज़मीन तंग होने लगी तो उन्होंने अपने क़ौमी मसले पर ग़ौर करना शुरू किया और इस ग़ौर व फ़िक्र का सबब वह किताब थी जो एक यहूदी लेखक थियोडोर हर्ज़ल ने 1895ई0 में लिखी और फिर यह फ़िक्र लेकर खड़ा हुआ कि दुनिया में एक ऐसी जगह होनी चाहिए जो यहूदियों का क़ौमी वतन बन सके और वह वहां अमन से रह सकें और जहां भी यहूदी सताए जाएं इस वतन में मुन्तक़िल हो जाया करें। इस मक़सद के लिए उस शख़्स ने अनथक जद्दोजहद की और कान्फ्रेंस पर कान्फ्रेंस करके यहूदी शऊर जगाया, उसने दुनिया की अलग–अलग हुकूमतों से मदद की मांग की और 1897ई0 से लेकर 1911ई0 तक दस कान्फ्रेंसे करवाईं।

पहली कान्फ्रेंस बाज़ल (स्विटज़रलैंड) में हुई, उसमें जो तजवीज़ें तय की गईं थी उनमें से कुछ यह थीं: फ़िलिस्तीन में नव आबादयाती निज़ाम का ज़राअती व सनाअती और तिजारती कामों में इजरा किया जाए, यहूदी उन्सर की ताज़ीम की जाए और उनके आपस के रवाबित मज़बूत किये जाए ताकि वह मक़ामी और आलमी इदारे क़ायम कर सकें, क़ौमी शऊर पैदा किया जाए, इबरानी ज़बान की तालीम दी जाए, मदरसे क़ायम किये जाएं और इक़्तिसादी तरक़्क़ी के लिए फ़न्ड खोला जाए, माल व सरमाया मुहैय्या करके बड़ी–बड़ी स्कीमें

चलाई जाएं और सहयूनी तहरीक की ग़रज़ उस वक़्त यह मुतअय्यन की गई थी कि यह फ़िलिस्तीन में यहूदियों के क़ौमी वतन को मअरज़ वजूद में लाने की कोशिश है, यह वतन सारी हुकूमतों की तरफ़ से महफ़ूज़ व मामून होगा और आलमी तौर पर तस्लीम शुदा होगा।

हर्ज़ल जद्दोजहद करता रहा, यहूदियों की एक माक़ूल तादाद ने उसकी मदद भी की, उसने सुल्तान अब्दुल हमीद वाली तुर्की से भी अक़ामते वतन के लिए बातचीत और उनको अच्छा ख़ासा माद्दी मुआवज़ा देने का वादा किया, लेकिन सुल्तन मौसूफ़ से मामला तय न हो सका और इसी बीच लार्ड क्रूमर के ज़रिये जज़ीरा नुमाए सीना की पेशकश की और 1903ई0 में एक तहक़ीक़ाती वफ़्द जज़ीरा नुमाए सीना गया, जिससे वापस आकर ज़मीन की इमरानी सलाहियतों के बारे में मायूसकुन रिपोर्ट पेश की जिस पर तजवीज़ तय की गई।

चेम्बरलेन ने इसी साल मश्रिक़ी अफ़्रीक़ा में एक बड़े रक़्बे की पेशकश की, जिसको 1905 की यहूदी कान्फ्रेंस ने यह कहकर ठुकरा दिया कि बैतुल मुक़द्दस से इस इलाक़े का कोई वास्ता नहीं और हम बैतुल मुक़द्दस चाहते हैं। 1904ई0 में थियोडोर हर्ज़ल मर गया। उसके मरने के बाद वतन क़ायम करने की जद्दोजहद ठंडी पड़ गई और उसमें वह पुराना ज़ोर व ताक़त बाक़ी न रह सकी, पहले विश्वयुद्ध से पहले तक उन कोशिशों को सिर्फ़ एक आरज़ू व तमन्ना कहा जा सकता था और फ़िलिस्तीन में यहूदी ताक़त को मुसलमानों के मुक़ाबले में एक बहुत कमज़ोर तनासुब के अलावा दूसरा दर्जा नहीं दिया जा सकता था, पहली जंगे अज़ीम शुरू हुई और तुर्की हुकूमत ने जो सारी इस्लामी दुनिया पर हुकूमत कर रही थी, जर्मनी का साथ दे दिया, दोनों मुल्कों ने इत्तिहादियों के मुक़ाबले में शिकस्त खाई और बर्तानिया, फ्रांस व इटली ने सारे अरब को आपस में तक़सीम कर लिया। अरब देशों में यहूदियों के सरपरस्त बर्तानिया को जब तसरुफ़ करने का मौक़ा मिला तो यहूदी क़ौम ने एक नया लीडर रागला, यह शख़्स डाक्टर हातिम व यरनान मानचेस्टर यूनिवर्सिटी का प्रोफ़ेसर था, उसने जंग के बाद मोहलिक हथियार ईजाद करके बर्तानिया की नज़रों में अपना मक़ाम बना लिया था, उसका शुक्रिया बहरहाल बर्तानिया को अदा करना था और आख़िरकार 1917ई0 में बिट्रेन के विदेश मंत्री ने ऐलान किया कि बर्तानवी हुकूमत यहूदियों के लिए एक वतन क़ायम करना ज़रूरी समझती है और वह इस इरादे को अमली जामा पहनाने में कोताही न करेगी।

इधर फ़िलिस्तीन बर्तानी इक़्तिदार में आ गया था, उधर यहूदियों की मांग यह थी कि फ़िलिस्तीन के अन्दर उनका मतलूबा वतन बनाया जाए और फिर बर्तानिया से ऐसा कहा जाना मुश्किल था कि फ़िलिस्तीन की आबादी को अललऐलान मजबूर करके उनके शहर और आबादियां यहूदियों का मसकन बना दिये जाएं। यह अललऐलान एक क़ौम की अच्छी–ख़ासी आबादी को क़त्ल कर देने के बराबर था, इसलिए बर्तानिया ने ख़ामोश तरीक़े से मुसलमानों को क़ानून के ज़रिये तंग करना और यहूदियों को मराआत देना और फ़िलिस्तीन की तरफ़ सारे आलम से यहूदियों की हिजरत को मरग़ूब बनाकर पेश करना, काश्तकारों, सिनाअतों को टैक्स और सख़्त और तकलीफ़ देह क़ानूनों से ज़ेरबार करा और यहूदियों को अपनी गुंजाइशों से अपने कारोबार, जाएदाद बढ़ाने, फैलाने और क़दम जमाने का मौक़ा मुहैया करना अख़्तियार किया। इस तरह यहूदी आबादी बढ़ती गई और अरबों के लिए फ़िलिस्तीन की ज़मीन भारी होती चली गई।

जब यह जब्र व तश्द्दुद की जद्दोजहद खुले तौर पर महसूस की जाने लगी तो अरबों ने एहतिजाज किया, अरब हुकूमतों की दुहाई दी, लेकिन अरब हुकूमतें कुछ न कर सकीं, वह सब अंग्रेज़ों के ज़ेरे इक़्तिदार थीं, वादा करती थीं लेकिन अगला क़दम कोई न उठाता था, आख़िरकार जब फ़िलिस्तीनी अरबों को अरब हुकूमतों से मायूसी हुई तो उन्होंने जो कुछ अस्लहा इकट्ठा हो सके उनसे यहूदियों का मुक़ाबला और अपनी क़ौमी बक़ा के लिए जद्दोजहद शुरू कर दी, इसके नतीजे में हथियारबन्द झड़पें हुईं, जिस पर अंग्रेज़ों ने इस्लाह और क़यामे अमन के नाम पर अरब क़ायदीन को हिरासत में ले लिया और कोशिश करने वालों को सख़्त सज़ाएं दीं और यहूदियों के साथ रिआयत करते रहे। (आलमे इस्लाम और साम्राज्यी निज़ामः 119–123)

ग़ज़्ज़ा के लिए हमारी ज़िम्मेदारिया

मौलाना जाफ़र मसऊद हसनी नदवी

एक सदी क़ब्ला 1900ई0 में यहूदियों ने "क़रह सू" सुल्तान अब्दुल हमीद सानी के पास आया और उनसे कहा कि वह सहयूनी तन्ज़ीम को "याफ़ा" और "ग़ज़्ज़ा" के बीच की ज़मीन दे दें और उसके बदले में पांच लाख उस्मानी सोने के सिक्के उनको दिये जाएंगे और बीस लाख सिक्के सरकारी ख़ज़ाने में दिये जाएंगे। यह सुनना था कि सुल्तान को गुस्सा आ गया और उस यहूदी को उसी वक़्त महल से निकाल दिया, हालांकि उस वक़्त उनको शदीद माली बोहरान का सामना था।

इस वाक़्ये के चार साल क़ब्ला 1896ई0 में सुल्तान अब्दुल हमीद ने हर्ज़ेल यहूदी को जवाब दिया था कि "यहूदी चाहे लाखों की रक़म जमा कर लें, वह फ़िलिस्तीन की ज़मीन का एक टुकड़ा भी हासिल नहीं कर सकते, हम मरते दम तक किसी भी क़ीमत पर राज़ी नहीं हो सकते कि फ़िलिस्तीन की ज़मीन का एक मामूली टुकड़ा भी उनको दिया जाए।"

वह वक़्त भी कितना अन्दोहनाक और सख़्त था कि जब सुल्तान अब्दुल हमीद को माज़ूली की ख़बर सुनाई गई और उसमें वह शख़्स भी था जिसको सुल्तान ने अपने महल से निकाला था, जबकि वह तुर्क पार्ल्यामेंट का मेम्बर था। यहूदी क़ौम की मक्कारी और मुसलमानों की सादालौही को साफ़ महसूस किया जा सकता है, शाह फ़ैसल के साथ क्या हुआ? क्या उनके साथ जो कुछ हुआ उसको भुला दिया गया? उन्होंने अमरीका को धमकी दी थी कि हम तेल के कुवों को आग लगा देंगे और ऊंटों और ख़ेमों की ज़िन्दगी में वापस चले जाएंगे, लेकिन कुछ ही दिनों के बाद उनके भतीजे के हाथों मेहमानों के इस्तेक़बाल के दौरान उनको शहीद करा दिया गया।

साबिक़ पाकिस्तानी सदर जनरल ज़ियाउल हक़ के साथ क्या हुआ? हवाई जहाज़ गिराकर उनको शहीद करा दिया गया और उसमें साबिक़ पाकिस्तानी सदर के अलावा फ़ौज के कई अहम अमरीकी अहलकार भी, पसमंज़र सबको मालूम है।

कितनी जल्दी हालात बदले और उस पाक सरज़मीन में जिसमें क़िब्ला–ए–अव्वल है, ऐसे वाक़्यात पेश आए जिन्होंने उस ख़ित्ते का नक़्शा बदल दिया, दुनिया की सियासत बदल गई, क़दरें बदल गईं, मेयारे ज़िन्दगी बदल गया, नज़रियात बदल गये और यहूदियों ने अपना असर व रसूख बढ़ाया, अपना तसल्लुत क़ायम किया और इसके लिए तरह–तरह के वसाएल अख़्तियार किये।

1– बड़े मुल्कों में शाया होने वाले अख़बारों की माली मदद की ताकि वह सहयूनी फ़िक्र को आम करें और फ़िलिस्तीन में सहयूनी हुकूमत के क़याम की राह हमवार करें और यूरोप की आम राय को तैयार करें।

2– बड़ी रक़में देकर खेती के नाम पर ज़मीनें ली गईं और उन पर कारख़ाने और कालोनियां बनाई गईं।

3– फ़िलिस्तीनियों को मुल्क बदर किया गया और उनको पड़ोसी अरब देशों में बसाया गया ताकि फ़िलिस्तीन को मुसलमानों से ख़ाली कराया जाए जो यहां के अस्ल बाशिन्दे हैं और अरब मुल्कों ने जिस गर्म जोशी से उनको अपने यहां जगह दी, ऐसा लगा कि सबसे बड़े हमदर्द और मददगार हैं लेकिन अगर हक़ीक़त में देखा जाए तो यह मदद सच्ची नहीं थी, यह एक यहूदी साज़िश थी जो मुक़द्दस सरज़मीन को ख़ाली कराने के लिए रची गई और उसका शिकार मुसलमान आसानी से हो गए। इस तरह यहूद ने बालादस्ती क़ायम कर ली।

4– यहूदियों ने फ़िलिस्तीन की तरफ़ बड़ी संख्या में हिजरत की और यहां आबाद हो गए।

क्या यह नहीं हुआ कि मुसलमानों ने फ़िलिस्तीन से हिजरत की और यहूदियों ने फ़िलिस्तीन में पनाह ली? क्या अरब देशों के हुक्मरानों ने इन फ़िलिस्तीनियों के लिए अपने दरवाज़े नहीं खोले? क्या जाने या अनजाने में

सहयूनियों की मदद नहीं की गई? इस तरह सहयूनी मन्सूबा पूरा हुआ।

ख़ुद अपने ने सहयूनियों की मदद की। कई बार रफ़ह बार्डर बन्द करके उनकी मदद की गई। मुजाहिदीन को उन तक पहुंचने से रोका गया। उनके रास्ते में रूकावटें खड़ी की गईं। यहूदियों से मुआहिदे किये गये और उनके लिये रास्ते खोले गए, उनके सिफ़ारती ताल्लुक़ात क़ायम किये गए। उनकी चीज़ों और तिजारती सामान की आमद–ओ–रफ़्त जारी की गई और उसके बदले में मोटी रक़में हासिल की गईं और उन रक़मों के ज़रिये भारी–भारी हथियार ख़रीदकर उनकी मदद की। हुक्मरानों ने अपने मज़हब और अपनी क़ौम के साथ ग़द्दारी की बल्कि अपनेआप से ग़द्दारी की और उसके नतीजे में मुसलमानों ने अपनी ज़मीन खो दी।

आज हमने मासूम और अमनपसंद शहरियों पर बमों से बारिश करने वाले इस्राईली लड़ाकों पर बम फेंकने वालों से अपनी आंखें बन्द कर लीं, उन टैंकों से मुंह मोड़ लिया जो उन मासूम और निहत्थे बच्चों को जो अपने बैग उठाए स्कूल जाते हैं, रौंद रहे हैं, हमारे कानों में औरतों की चीखें, बच्चों का रोना–बिलकना, बूढ़ों की आहें और सहयूनी जेलों में बन्द मुसलमानों की कराहें सुनाई नहीं देतीं।

फ़िलिस्तीनी भाईयों के लिए ख़ासकर ग़ज़्ज़ा में रहने वाले मुसलमानों के क़त्ले आम पर हम जोशीली तक़रीरें और चन्द रस्मी बयान दे देते हैं या कहीं कोई जलसा हो जाता है और क़रारदादें पास हो जाती हैं।

वक़्त का तक़ाज़ा है कि हम अपने हालात बदलें, दुश्मन पर दबाव डालें, उसे पीछे हटने पर मजबूर करें, आम मुसलमानों का अलग मसला है, उनके पास कोई चारा नहीं सिवाय इसके कि वह मज़म्मत करें, एहतिजाज करें, मुज़ाहिरा करें, बयान दें और इस्राईली चीज़ों का बायकॉट करें, लेकिन जहां तक हुकूमतों का मसला है, उनको चाहिए कि हर मुमकिन हरबा इस्तेमाल करें और वाज़ेह मौक़िफ़ अपनाएं और आलमी ताक़तों तक आवाज़ उठाएं और पूरी ताक़त से मुजरिम सहयूनी हुकूमत पर दबाव डालें। कम से कम इतना तो क़िब्ला–ए–अव्वल और बैतुल मुक़द्दस की हिफ़ाज़त के लिये हम पर वाजिब और ज़रूरी है।

(अरबी से उर्दू तर्जुमाः मुहम्मद अमीन हसनी नदवी)

मायूसी की कोई ज़रूरत नहीं

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद (रह0)

"मैं हैरान हूं कि आज मुसलमान हैरान हो रहे हैं, हालांकि मैं तो कुफ्ऱ और मायूसी के तसव्वुर से भी कांप जाता हूं, क्योंकि यक़ीन करता हूं कि मायूस होना उस ख़ुदा–ए–ज़ुल जलाल वल इकराम की शाने रहमत व रबूबियत के लिए सबसे बड़ा इन्सानी कुफ्ऱ और उसकी जनाब में सबसे ज़्यादा नस्ले आदम की शोख़ चश्मी है, तुम जो उन बर्बादियों और शिकस्तों के बाद मायूस हो रहे हो तो बतलाओ कि तुमने ख़ुदा–ए–इस्लाम की कूव्वत व रहमत को किस पैमाने से नापा? वह कौन सा काहिने इब्लीस है जिसने ख़ुदा के ख़ज़ाना–ए–रहमत को देखकर तुम्हें बतला दिया है कि अब इस में तुम्हारे लिए कुछ नहीं है।"

(क़ुरआन का क़ानूने उरूज–ओ–ज़वाल: ११८)

शहीदों का ख़ून
इंशाअल्लाह बेकार नहीं जाएगा

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

पिछले साल अक्टूबर में हमास की क़यादत ने इस्राईल पर हमला किया। इस हमले की भनक भी इस्राईल को न लगी। उसको अपनी ख़ुफ़िया एजेन्सियों पर बड़ा नाज़ था और उसने प्रोपगन्डा कुछ ऐसा कर रखा था कि फ़िलिस्तीन तो एक तरफ़, आस–पास के देशो में किसी पेड़ का पत्ता भी हिलता तो उसको पता चल जाता है और उसको आस–पास के देशो पर ऐसी सैन्य श्रेष्ठता प्राप्त है कि वह पलक झपकते इस्राईल पर बुरी निगाह डालने वाले की आंख फोड़ सकता है लेकिन सलाम हो फ़िलिस्तीन के जांबाज़ों पर, उन्होंने कुछ इस अदा से धावा बोला और इस अंदाज़ से यलग़ार की, जिसने क़ुरूने अव्वल के जांबाज़ों की याद दिला दी। उनकी जुर्रत व हिम्मत ने उस गुब्बारे की हवा निकाल दी जो इस्राईल के झूठे प्रोपगन्डे से हिमालया लग रहा था, हवा निकलते ही वह अपने अस्ली साइज़ पर आ गया, इस्राईली की फ़ौजी बरतरी के जो क़िस्से पड़ोस के बुज़दिल हुक्मरानों के लिए डरावने ख़्वाब बने हुए थे, चश्मे ज़दन में वह फ़साने लगने लगे।

आज पूरी दुनिया यह कहने पर मजबूर है कि अगर इस्राईल को अमरीका और यूरोप की खुली हुई पुश्तपनाही न होती और इस्लामी देश चूड़ियां पहन कर न बैठते, अगर जंग में साथ नहीं दे सकते थे न देते, फ़ौजी साज़ोसामान भी मुहैया न करते, सिर्फ़ ख़ुफ़िया तौर पर इस्राईल की मदद करना छोड़ देते, सिर्फ़ फ़िलिस्तीनियों की ज़बानी ही सही खुलकर और दिल से हिमायत करते, इस्राईल हमास से शिकस्त ख़ुर्दा होकर ग़ज़्ज़ा के बच्चों, औरतों और निहत्थों का जो क़त्लेआम कर रहा है, सब मिलकर पूरी ताक़त से उसकी मज़म्मत करते और इस्राईल की फ़ौजी साज़ोसामान से मदद करने वाले यूरोप और अमरीका से साफ़–साफ़ कहते कि वह दोग़ली पॉलिसियां बन्द करें, एक तरफ़ वह इन्सानी क़द्रों की दुहाई देते नहीं थकते, दूसरी तरफ़ फ़िलिस्तीनियों का खुलेआम करने वाले इस्राईल की खुली मदद भी कर रहे हैं, न उनको फ़िलिस्तीनी बच्चों, औरतों और निहत्थों की चीख़–पुकार सुनाई दे रही है, न उनको इस्राईल की खुली दरिन्दगी नज़र आ रही है, अगर मुस्लिम देश सिर्फ़ इतनी जुर्रत कर लेते तो आज सूरतेहाल कुछ और होती और हमास और हिज़्बुल्लाह के हमलों के बाद इस्राईल की मआशी, सियासी और फ़ौजी हर एतबार से जो तबाही हुई है, तसव्वुर करें अगर सिर्फ़ पड़ोसी देश हिम्मत दिखा देते तो जंग का कुछ और नक़्शा होता।

बहुत अफ़सोस से कहना पड़ रहा है कि हमारे मुल्क हिन्दुस्तान की पॉलिसियां अभी कुछ दहाइयों पहले खुलकर फ़िलिस्तीन की हिमायत में थीं, सरकारी तौर पर आज भी हैं। लेकिन पहले खुलकर इस्राईल की हिमायत करने वाले उंगलियों पर गिने जा सकते थे और आज मुल्क पर एक ख़ास नज़रिये के ग़ल्बे की वजह से पूरा गोदी मीडिया इस्राईल का हामी बना हुआ है। जिनको फ़िलिस्तीन और इस्राईल के इतिहास का क–ख–ग–घ भी नहीं पता और जिनकी अपने मुहल्ले में भी कोई हैसियत नहीं, वह बड़े ही कर्र–ओ–फ़र्र के साथ "हम इस्राईल के साथ खड़े हैं" का नारा लगाते हैं। ज़ाहिर है कि इसकी तह में अस्ल कारफ़रमाई मुस्लिम दुश्मनी की है, लिहाज़ा वह तो दुनिया में कहीं भी मुसलमानों पर कोई ज़ुल्म करने वाला नज़र आए तो उसके साथ खड़े हो जाएंगे। इसलिए कि मुसलमानों की परेशानी से उनको दिली सुकून मिलता है, चाहे इसमें उनका कोई फ़ायदा भी न हो, लेकिन बहुत से ऐसे सहाफ़ी भी इस मामले में नावाक़िफ़ और सरकारी हक़ाएक़ से बेख़बर नज़र आए जिनपर गोदी मीडिया का लेबल नहीं है। उन्होंने 7 अक्टूबर के हमास के हमले को एक दहशतगर्दाना हमला क़रार दिया और इस हमले को हर हाल में नाजाएज़ क़रार दिया। काश! उन्होंने इस्राईल और फ़िलिस्तीन का इतिहास पढ़ा होता और

देखते किस तरह जर्मनी से आने वाले यहूदियों ने फ़िलिस्तीन में पनाह ली और फिर उस फ़िलिस्तीन पर आहिस्ता–आहिस्ता क़ब्ज़ा जमा लिया, जिसको नब्बे फ़ीसद से ज़्यादा अरबों की थी। उनको ढकेलते हुए ग़ज़्ज़ा और मग़्रिबी किनारे के मामूली ख़ित्ते में महसूर कर दिया और वहां भी लगातार उन पर अज़ीयतों का सिलसिला जारी रखा और मुसलसल तौहीन की, किसी के पूरे घर पर क़ब्ज़ा करके उसको घर के बाहर सड़क किनारे रहने पर मजबूर कर दिया जाए और मुसलसल उस पर कूड़ा भी डालकर उसको ज़लील किया जाए और दूसरे लोग उसको सब्र की तलक़ीन करें तो यह शख़्स कहां तक सब्र करेगा? अपने घर को हासिल करने के लिए वह किसी भी हद तक चला जाएगा, चाहे उसकी जान ही क्यों न चली जाए, यही वजह है कि अक़्वामें मुत्तहिदा के सेक्रेट्री जनरल ने कहा था कि 7 अक्टूबर का हमला अचानक और ग़ैर मुतवक़्क़ा हमला नहीं था, इस्राईल इस पर नाराज़ हुआ, लेकिन उसने अपने हमले को वापस नहीं लिया।

इसलिए हम समझते हैं कि फ़िलिस्तीनियों को अगरचे बहुत बड़ी तादाद में अपनी जानों का नज़राना पेश करना पड़ा है, आज हमारे यह भाई भूख और प्यास से बिलबिला रहे हैं, ज़ाहिरी तौर पर इस्राईल उन पर हावी नज़र आ रहा है, लेकिन इस जंग से इस्राईल को सियासी, मआशी और अख़्लाक़ी तमाम मैदानों में शिकस्त फ़ाश हुई है। यूरोप और अमरीका की मक्कारियां तश्त–अज़–बाम हुई हैं, अक़्वामे आलम की हिमायत आहिस्ता–आहिस्ता अहले फ़िलिस्तीन को हासिल हो रही है और हमारा कामिल यक़ीन है कि शहीदों का ख़ून रंग लाएगा और फ़तेह का परचम इंशाअल्लाह लहराएगा और जिस तरह सलाहुद्दीन अय्यूबी की शुजाअत की मिसालें दी जाती हैं, इसी तरह शहीद क़ायदों का नाम लिया जाएगा।

एक तारीख़ी वसीयत

"मेरी वसीयत है कि तुम सदा शहीदों के ख़ून के लिए वफ़ादार रहना, बिलाशुब्हा वह गुज़र गए और हमारे लिए और हमारे लिए यह कांटों भरी राह छोड़ गए, ताहम उन्होंने अपने लहू से हमारे लिए आज़ादी का रास्ता हमवार कर दिया। तुम हरगिज़ सियासतदानों के मफ़ादात की ख़ातिर और डुप्लोमेसी के खेलों में आकर शहीदों की उन क़ुर्बानियों को राएगा न जाने देना।

तुम्हारा काम यह है कि अगलों ने जो आग़ाज़ किया है उसे तकमील तक पहुंचाओ और उस राह से ज़रा भी न हटो, चाहे उसके लिए कितनी ही भारी क़ीमत अदा करनी पड़े। ग़ज़्ज़ा इस्तिक़ामत का मरकज़ और फ़िलिस्तीन का धड़कता हुआ दिल पहले भी था और आइन्दा भी रहेगा, चाहे वह वसीअ व अरीज़ सरज़मीन हमारे लिए कितनी ही तंग हो जाए।

जब मैंने सन् २०१७ई० में ग़ज़्ज़ा में हमास की क़यादत संभाली तो वह महज़ एक क़यादत की तब्दीली नहीं थी बल्कि मज़ाहमत का ऐसा तसलसुल था जिसका आग़ाज़ पत्थर से हुआ और अभी भी वह बन्दूक़ से जारी है। हिसार में घिरी मेरी क़ौम का दर्द मुझे हर पल बेचैन करता था। मैं जानता था कि आज़ादी की तरफ़ उठने वाला हमारा हर क़दम क़ीमत चाहता है, लेकिन मैं तुमसे साफ़ कहता हूं कि हार मान लेने की क़ीमत इससे बहुत बड़ी होगी, इसलिए इस ज़मीन से ठीक उसी तरह चिमटे रहो जिस तरह जड़ें मिट्टी से जुड़ी रहती हैं। याद रखो! जो क़ौम ज़िन्दा रहने का फ़ैसला कर लेती है तो बड़े–बड़े तूफ़ान भी उसके पाया–ए–सबात में तज़लज़ुल बरपा नहीं कर पाते......... इन्साफ़ का इन्तिज़ार मत करो, बल्कि तुम ख़ुद इन्साफ़ बन जाओ, अपने दिलों में फ़िलिस्तीन का ख़्वाब सजाकर रखो, ज़ख़्म को हथियार बना दो और हर आंसू को उम्मीद के चश्मे में बदल दो।

यह मेरी वसीयत है कि सर मत झुकाना, अपने शहीदों को न भूल जाना और इस ख़्वाब पर कोई सौदा मत कर लेना जो तुम्हारा हक़ है।" (क़ायद यहया सिनवार शहीद की वसीयत से लिया गया एक इक़्तिबास)

मर्द-ए-मैदाँ - यहया सिनवार

मौलाना फ़ैसल अहमद भटकली नदवी

मुजाहिद रहनुमा, बुलन्द निगाह व आली हौसला, जंग में कूद पड़ने वाले, बहादुर सूरमा, खुद्दार व ग़ैरतमन्द, जाँबाज़ व सरफ़रोश, पेश क़दमी करने वाले, दिलावर, मर्द–ए–मैदां' अबू इब्राहीम यहया सिनवार की शहादत की ख़बर हमें मौसूल हुई, निगाह नम, चश्मे तर, दिल मग़्मूम और क़ल्बे मुतमईन के साथ।

हमने जैसे ही उनकी मौत की ख़बर सुनी, तो हमें उनके फ़ौत हो जाने का सख़्त सदमा हुआ, हम कितनी उम्मीद लगाए बैठे थे कि तूफ़ान अल अक़्सा की जंग उसके क़ायद सिनवार के हाथों उनकी आंखों के सामने क़रीबी फ़तेह मुबीन की शक्ल में ज़ाहिर होगी लेकिन बहरहाल हमें उस वादे पर तसल्ली है जो अल्लाह तआला ने अपने चहीते नबी मुहम्मद (स0अ0व0) से फ़रमायाः

"फिर अगर हम आपको उठा लें तो भी हम उन (काफ़िरों) से बदला लेकर रहने वाले हैं, या अगर हम आपको वही दिखला दें जिसका हमने उनसे वादा कर रखा है तो हम उस पर भी क़ादिर हैं।" (आले इमरानः 146)

हमने उनके आख़िरी तर्ज़ेअमल और उनकी पुर असर शहादत के मन्ज़र को देखा तो मारे इज़्ज़त व सुर्ख़ेरूई के हमारे सर ऊंचे हो गए और हमारे फ़ख़्र व मुबाहात में चार चांद लग गए।

यहया सिनवार की शहादत में उन कोर अक़्लों के लिए भी एक पैग़ाम है जो हमास क़ायदीन को कोसते हैं और उन पर तरह–तरह के इल्ज़ाम लगाते हैं कि वह मुल्क से बाहर दादे ऐश दे रहे हैं, या ग़ज़्ज़ा के मख़्फ़ी ठिकानों में अमन व अमान से छिपे हुए हैं, या सुरंगों के नीचे फ़रार हैं और अपनी अवाम को उन्होंने इस्राईली बमबारी और सहयूनी जारिहियत का निशाना न बनने के लिए छोड़ दिया है।

सच्ची बात यह है कि इस वाक़्ये के बाद हमें उन जवाबात में मज़ीद बसीरत व आगही हासिल हो गई जो हम उन जाहिलों को देते थे।

यह है कि उनका जांबाज़ सरफ़रोश क़ायद यहया सिनवार जो हरावल दस्ते में, फ़ौजी वर्दी में दुश्मन से झड़पें कर रहा है। क्या लोग इख़्लास और वफ़ादारी में इससे बढ़कर किसी और चीज़ के मुन्तज़िर हैं? वह तो सरफ़रोशी व मज़ाहमत और सब्र व इस्तिक़ामत की पहचान था! वह तो हिम्मत व जांफ़शानी और पेशक़दमी और जांबाज़ी की शिनाख़्त था! वह तो अपनी ज़िन्दगी के आख़िरी दम तक डटने, जमने और साबित क़दम रहने का आईनादार था! बिलाशुब्हा वह इमाम शहीद अहमद यासीन से क़ायद शहीद इस्माईल हानिया तक अपने पेशरुओं का बेहतरीन जांनशीन थाः

"सो जो कुछ उन्हें अल्लाह की राह में पेश आया, उससे न तो उन्होंने हिम्मत हारी और न ही वह दबे और अल्लाह सब्र करने वालों को दोस्त रखता है।"

वह लोग हमासी शायर क़ैस बिन ज़हीर अब्सा के उन अश्आर का हक़ीक़ी मिस्दाक़ और परतो हैं:

(यह उस पर के बेटे हैं जिसने ऐसी तलवारों को जन्म दिया जो धारदार हैं, उनमें से हर एक उम्दा लोहे की सैक़ल शुदा आज़मूदाकार है)

शहीद यहया सिनवार की बहादुरी ने दुनिया को हैरान कर दिया है और इंशाअल्लाह वह अनक़रीब क़ौमों के धारे को बदलकर रख देगी, उनका आख़िरी हाल यह है कि हाथ कटा हुआ है, पैर ज़ख़्मों से शल हैं और वह अपने सोफ़े पर शाहों की तरह बैठे–बैठे अपने दूसरे हाथ से अपनी लाठी फेंकते हैं, यहां तक कि उनकी यह अदा एक कहावत ओर ज़रबुल मिसाल बन गई और दो दिन में आलमी पैमाने पर आम हो गईः "رميته بعصى السنوار"

बिलाशुब्हा यह इसलिए है कि अल्लाह तआला ने उनकी चाहत न सिर्फ़ मुसलमानों के दिलों में बल्कि दुनिया भर के तमाम इन्साफ़ पसंदों के दिलों में डाल दी है।

हैफ़ सद हैफ़! उन लोगों पर जिन्होंने उनकी मौत पर खुशियां मनाईं और तुफ़ है दस्तार–ओ–कुब्बा वालों (अरबों) पर!

सलाम आप पर ऐ अबूइब्राहीम!

आपने एक मुनफ़रिद मिसाल पेश की है, बहादुरी की तारीख़ में आपने एक ग़ैर मामूली रोल मॉडल पेश किया है और आपने अपने पुख़्ता ईमान, बेलौस वफ़ादारी, नायाब बहादुरी और बाइज़्ज़त मौत से लोगों के दिलों पर बड़ा मक़ाम बना लिया है और आपका चर्चा क़यामत तक हमेशा रहेगा, गोया मैं उनके वालिद को यह कहते हुए सुन रहा हूंः

سميته يحيى ليحيا...

मैंने इसका नाम यहया रखा था ताकि वह ज़िन्दा रहे।

बिलाशुब्हा अल्लाह के यहां जो कुछ है वह बेहतरीन है और पायेदार भी!

सलाम हो आप पर ऐ अबू इब्राहीम! जिस दिन कि आपकी पैदाइश हुई, जिस दिन की आपकी वफ़ात हुई और जिस दिन आप दोबारा उठाए जाएंगे।

(तरजुमानीः अबूबक्र सिद्दीक़ नदवी)

शहादत है
मतलूब-ओ-मक़सूद-ए-मोमिन

मौलाना मुहम्मद सलमान बिजनौरी नदवी

ग़ज़्ज़ा जंग को एक साल से ज़्यादा का अर्सा गुज़र चुका है, ज़लील और दरिन्दा सिफ़त दुश्मन यहूदियों ने अपनी दरिन्दगी की तमाम हदों को पार कर दिया है। लेकिन इस्लाम के सपूतों, ईमानी ग़ैरत व हमीयत के मतवालों और शहादत का शौक़ रखने वाले मुजाहिदीन के पाया–ए–सिबात में ज़रा भी जुम्बिश देखने में नहीं आई, मुजाहिदीन मुसलसल अपने दीन इस्लाम की सरबुलन्दी और मस्जिदे अक़्सा की हिफ़ाज़त व सयानत की ख़ातिर अपनी जानों का नज़राना पेश करते जा रहे हैं और दुनिया के सामने ऐसे मुजाहिदाना कारहाए नुमायां पेश कर रहे हैं कि ऐसी मिसालें दुनिया ने तारीख़ के सफ़हात में क़ुरूने अव्वल के मुसलमानों की ही सुनी और पढ़ी होंगी, अक़्लें हैरान हैं, ज़हन व दिमाग़ की क़ूव्वत जवाब दे चुकी है, ऐसे ख़ीरा कर देने वाले वाक़्यात रौनुमा हो रहे हैं कि जो तसव्वुरात से बालातर हैं, ऐसी बेख़ौफ़ी, ऐसी दिलेरी व पामर्दी, ऐसी जवां मर्दी व शुजाअत के जौहर देखने में आ रहे हैं कि दुश्मन के दांत खट्टे हो गए, दुश्मन अन्दरूनी तौर पर शिकस्त ख़ुर्दा हो चुका है, उसके सोचने समझने की ताक़त ख़त्म हो गई है और दुश्मन का जो जानी और माली नुक़सान है उससे पहले कभी देखने में नहीं आया, अगर अमरीका की पुश्तपनाही न हो तो हमास के सामने दुश्मन एक दिन भी न टिक सके।

शौक़े शहादत, जज़्बा–ए–जिहाद, ईमानी ग़ैरत व हमीयत, जन्नत की तलब गोया जन्नत निगाहों के सामने हो और बस कुछ क़दमों की देरी हो या गोया फ़रिश्तों की क़तार नज़र आ रही हो जो उनको अपने आग़ोश में लेने के लिए तैयार हों।

शहादत है मतलूब–ओ–मक़सूद–ए–मोमिन
न माले ग़नीमत न किश्वर कुशाई

वह चाहे इस्माईल हानिया हों या यहया सिनवार हों, मैदाने जंग में सबसे आगे रहे, अपनी फ़ौज के हथियार उठाने और मैदाने जंग में कूदने से पहले ख़ुद मैदान में सर से कफ़न बांधकर आ गए। ऐसा बिल्कुल नहीं हुआ कि क़ायद अपनी क़यामगाह पर हो और फ़ौज मैदान में हो, शहीद इस्माईल हानिया ने अपने घर और ख़ानदान के तमाम ही लोगों की शहादत को अपनी आंखों से देखा और फिर जो जामे शहादत नोश किया और शहीद यहया सिनवार ने तो सहाबा किराम की याद ताज़ा कर दी और एक वीडियो में वह अपने कमान्डरों के साथ दुश्मन का मुक़ाबला करते नज़र आ रहे हैं और ज़ख़्मी हालत में होने के बावजूद बहादुरी के साथ एक इस्राईली ड्रोन पर हमला करते हुए दिखाई दे रहे हैं और बताया गया कि अपने कटे बाज़ू को उन्होंने तार से बांध रखा है कि ख़ून बहना बंद हो जाए। फ़िलिस्तीनी मुजाहिदीन के जिस्मों में ऐसी ईमानी रूह गर्दिश कर रही है जिसको ज़ेर करना आसान तो क्या होता, नामुमकिन नज़र आ रहा है, इस्राईल और अमरीका दोनों मिलकर भी इन मुजाहिदीनों के अज़ाएम और हौसलों को शिकस्त देने में अब तक नाकाम रहे हैं और आज ही मुजाहिदीन की तरफ़ से एक ऐलान शाया हुआ कि जंगबन्दी की सिर्फ़ एक सूरत है, वह यह कि इस्राईली फ़ौज मुकम्मल ग़ज़्ज़ा से निकल जाए, सुब्हान अल्लाह! बेसर–ओ–सामानी का आलम है, निहत्थे हैं, हथियारों की कमी है, यह सिर्फ़ और सिर्फ़ ईमानी ताक़त व क़ूव्वत है जो उनसे यह काम करा रही है।

इस मौक़े पर हम फ़ातेह–ए–उन्दुलुस तारिक़ बिन ज़ियाद (रह0) के ईमान अफ़रोज़ ख़िताब से कुछ कलिमात पेश करते हैं जो उन्होंने आग़ाज़े जंग से पहले अपने मुख़्तसर लश्कर को ख़िताब करते हुए फ़रमाए थे:

"ऐ बहादुरो! मैदाने जंग से कूच करने की अब कोई सूरत नहीं है, इसलिए सिर्फ़ पामर्दी से निजात है। ऐ मुजाहिदो! मेरी तक़लीद करो और सब एक जिस्म एक जान बल्कि सीसा पिलाई हुई दीवार हो जाओ, मैं ख़ुद दुश्मन का दस्त बदस्त मुक़ाबला करूंगा और अगर मैं मारा जाऊं तो तुम हिम्मत मत हारना, मेरी जगह किसी और को अमीर मुक़र्रर करके जंग जारी रखना, अगर तुमने बुज़दिली दिखाई तो बर्बाद हो जाओगे और शिकस्त मुक़द्दर बन जाएगी। ख़बरदार! ज़िल्लत पर राज़ी न होना और अपने आप को किसी क़ीमत पर भी दुश्मन के हवाले न करना, अमीरुल मोमिनीन ने तुम्हें इस मुल्क में अल्लाह के कलिमे की बुलन्दी और दीने इस्लाम के ग़ल्बे के लिए भेजा है।"

वबाले दोश है सर जिस्मे नातवां पे मगर....

मौलाना मुहम्मद तारिक़ बदायूंनी

कुरआन मजीद में अल्लाह तआला का इरशाद हैः

"ईमान वालों में बहुत से ऐसे जियाले थे जिन्होंने पहले ही अल्लाह से किये हुए वादे को पूरा कर दिखाया। अल्लाह की मुख़्लिसाना इताअत की, उसके रास्ते में जिहाद किया और शदीद सख़्त हालात से भी सब्र किया। उनमें से सभी ने राहे ख़ुदा में अपनी जानों का नज़राना पेश कर दिया और शहीद हुए। बाज़ अब भी दो में से एक ख़ैर के मुन्तज़िर हैं या तो नुसरत व ग़ल्बा मिलेगा या शहादत नसीब में आयेगी। उन्होंने ने वादा तब्दील किया और न वादा ख़िलाफ़ी की जैसे मुनाफ़िक़ों ने किया; बल्कि वह डटे रहे और सच्चे साबित हुए।"

अल्लाह के बन्दे अल्लाह के अलावा किसी से नहीं डरते। उनके अज़्म व हौसले, हिम्मत वा जांबाज़ी, अहद–ओ–पैमान अटूट होते हैं। वह दीन के सिपाही, इस्लाम के अलमबरदार होते हैं। दीन–ओ–इस्लाम के लिए उनकी जानें निसार होती हैं। इस्लाम के शआएर की हिफ़ाज़त उनका शेवा होता है। इस्लामी खेप तैयार करना और हर बातिल महाज़ पर डटे रहना उनका ईमान होता है। जब कभी भी इस्लाम और शआएर–ए–इस्लाम को ख़तरा लाहक़ होता है तो यही सफ़े अव्वल में नज़र आते हैं। चूंकि उनका मक़सद अल्लाह की रज़ा हासिल करना और गुनाहों से बचते हुए अपने नफ़्स को ताअते इलाही की राह पर चलाना होता है और फिर राहे ख़ुदा में जो भी वादा करते हैं उसे पूरा करते हैं। उनके दिल ईमानी जोश और नुसरत व फ़तेह के वादे से मामूर होते हैं। बरख़िलाफ़ कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन व मुनाफ़िक़ीन के कि वह अपने अहद भी भूल जाते हैं और ग़ायत दर्जे बुज़दिली का इज़हार भी करते हैं। बिलाशुब्हा अल्लाह तआला ने ऐसे ही लोगों के बारे में यह आयत नाज़िल फ़रमाई है।

कशाफ़ में यह ज़िक्र मिलता है कि बाज़ सहाबा किराम (हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान, हज़रत सईद बिन ज़ैद, हज़रत हमज़ा और हज़रत मुसअब बिन उमैर (रज़ि0) वग़ैरह) ने यह नज़र मानी थी कि जब रसूलुल्लाह (स0अ0व0) के साथ किसी मारके में शरीक होंगे तो साबित क़दमी के साथ उस वक़्त तक क़िताल करते रहेंगे यहां तक कि शहादत का दर्जा न पा लें।

यह थे वह मर्दाने हक़; यह कभी मुंह नहीं मोड़ते गरचे काम ही क्यों न आ जाएं। ऐसी दीन की ख़िदमतक रने वाले हर ज़माने में रहे हैं। आजकल सरज़मीने अम्बिया फ़िलिस्तीन में यही मर्दाने हक़ पूरी मिल्लत की तरफ़ से फ़र्ज़े किफ़ाया अदा कर रहे हैं, गोया वह इस शेर का मिस्दाक़ हों:

वबाले दोश है सर जिस्मे नातवां पे मगर
लगा रखा है तेरे ख़ंजर व सिना के लिए

सलाम पेश है ग़ज़्ज़ा के उन मज़ाहमती सितारों को बरसहा बरस ऐसी ख़ौफ़नाक जेलों में महसूर रहे जिनका ज़िक्र ही रूहों को तड़पा देने के लिए काफ़ी है। लेकिन उनके यक़ीने मोहकम, अमले पैहम, अज़्म व हौसलों और शहादत के जज़्बे पर हर्फ़ न आ सका, अज़ीज़ व अक़रबा, वालिदैन, औलाद से दूर हो जाने पर ज़रूर दिल मसोस कर रह गए; मगर दुआओं में याद करना न भूले और वही जाते–जाते अज़्म व हौसलों को बढ़ाने का काम कर गए, हंसते–मुस्कुराते और दुश्मने ख़ुदा को मुंह चिढ़ाते हुए अपनी आख़िरी आरामगाह तक पुरसुकून होकर जा पहुंचे। उनके अज़्म ने तमाम आहिनी दीवारों और ख़ारदार तारों को तोड़ दिया। अपने सालिहीन, नेकोकार, अल्लाह के लिए जीने और मरने वाले आबा व अजदाद के किये हुए वादे पर डटे रहे, ऐसे कि मस्जिदे अक़्सा की हिफ़ाज़त की कोशिश में अपने ख़ून का आख़िरी क़तरा तक लुटा दिया। क़ायदे आज़म यहया सिनवार की जुर्रत व हिम्मत इस्तेआरा बन गई, उनके बेजान हाथों से एक मामूली छड़ी ने ख़ेमा–ए–कुफ़्फ़ार की ज़ाहिर व बातिन शीराज़ा बन्दी को मुन्तशिर कर दिया। यह अज़ीम मुजाहिदीन ग़ासिबों से मस्जिदे अक़्सा की आज़ादी और अपने घरों, ज़मीनों को वापस लेने के लिए तमाम कोशिशें कर रहे हैं जो बिलाशुब्हा राहे ख़ुदा में ऐन जिहाद है।

फ़िलिस्तीनी मसले का दीनी व ऐतिहासिक पसमन्ज़र

मुहम्मद नजमुद्दीन नदवी

मध्यपूर्व एशिया में मुल्क शाम (वर्तमान सीरिया) ज़मीन का वह हिस्सा है जिसे पैग़म्बरों की मुक़द्दस सरज़मीन होने का सौभाग्य मिला हुआ है। यह देश अब चार हिस्सों (उरदुन, लेबनान, शाम व फ़िलिस्तीन) में बंटकर दुनिया के मन्ज़रनामें में मौजूद हैं। माज़ी से हाल तक के मसले व आने वाले चैलेंजों का सामना हमें इस पहलू की तरफ़ रहनुमाई करता है कि आलमे अरबी के पूरे ख़ित्ते का हस्सास तरीन और जज़्बाती मसला सरज़मीने फ़िलिस्तीन की आज़ादी और मस्जिदे अक़्सा की बाज़याबी है। अर्ज़े फ़िलिस्तीन का दीनी व तारीख़ी पसमन्ज़र अगर देखा जाए तो पहली आलमी जंग तक तुर्की की उस्मानी हुकूमत का क़ब्ज़ा रहा, मगर जब उसके क़ब्ज़े से निकल गया तो यहां की सरज़मीने ख़रीद–ख़रीद कर यहूदियों की आबादियों के मन्सूबे को बरूएकार लाया गया, पहली आलमी जंग के ज़माने में मई 1916ई0 में फ्रांस व ब्रिटेन के बीच सायक्स पैको मुआहिदे में फ़िलिस्तीन को यहूदियों का वतन तस्लीम किया गया, जबकि उससे दसियों साल पहले 1845ई0 में यहूद को फ़िलिस्तीन में बसाने का ब्रिटेन ने तुर्की की उस्मानी हुकूमत से मुतालिबा किया गया था। नवम्बर 1917ई0 में वादा–ए–बिलफ़ोर में है कि फ़िलिस्तीन में यहूदी मुम्लकत की तासीस पर हुकूमते बर्तानिया ग़ौर कर रही है और हर मुमकिन कोशिश उसके लिए करेगी। बाद में बर्तानिया ने मुनज़्ज़म तौर पर सरज़मीने मुक़द्दस को यहूदियों के हवाले करना शुरू कर दिया। साथ ही अहले फ़िलिस्तीन पर अर्सा हयात को तंग किया गया, मुश्किलें खड़ीं की गईं, मआश व जीस्त के वसाएल उनके हक़ में कम से कम कर दिये गये। यहूदियों ने दूसरी आलमी जंग से अमरीका की ताईद व हिमायत हासिल की, नवम्बर 1945ई0 में एक कमेटी एंगलो अमेरिकन तश्कील दी गई और अमरीका मसला–ए–फ़िलिस्तीन में कुछ इस तरह दाख़िल हो गया। एक रिपोर्ट के मुताबिक़ बानबे हज़ार यहूदी (1939 से 1945 तक) हिजरत करके फ़िलिस्तीन में बस गए और 1946–1948 में हिजरत करने वाले 61 हज़ार की तादाद में थे। सन् 1948ई0 में तथाकथित आलमी इदारा अक़्वामे मुत्तहिदा (सयुंक्त राष्ट्र संघ) ने अमरीका के दबाव में आकर फ़िलिस्तीन को दो हिस्सों में कर दिया और यहूदियों को फ़िलिस्तीन का 55 प्रतिशत फ़िलिस्तीन के मग़रिबी हिस्से पर क़ब्ज़ा मिल गया। 14 मई 1948ई0 को ब्रिटेन का कन्ट्रोल फ़िलिस्तीन से ख़त्म हुआ, ब्रिटेन की फ़ौज का वहां से जाना हुआ, इसी के साथ अमरीका व ब्रिटेन की नाजाएज़ औलाद यहूदी राष्ट्र इस्राईल आलमी मन्ज़रनामे पर आ गई और उसका वजूद तस्लीम कर लिया गया, इसी तरह आपसी इन्तिशार, जमाअती ख़लफ़िशार और अपनो की सादगी और ग़ैरों की अय्यारी से फ़िलिस्तीन मुसलमानों के हाथों से निकल कर एक ज़लील तरीन और मग़ज़ूब क़ौम के क़ब्ज़े में चला गया।

अक्टूबर 1948ई0 की ग़ज़्ज़ा कान्फ्रेंस में अहले फ़िलिस्तीन ने उमूमी हुकूमत का ऐलान किया मगर मुस्लिम मुलूक व सलातीन अपने आक़ाओं की ख़ुशनूदी के तईं फ़िलिस्तीन का निहायत आसानी से सौदा किया और सिर्फ़ अपने उन माहिरीन अहले इल्म व फ़न को कुचलने में अपनी तवानाई सर्फ़ करते हैं जो हुकूमत की ग़लत पॉलिसी पर बेलाग तब्सिरा करते हैं। 1967ई0 की तारीख़ी जंग इस्राईल की जीत और अरब की शिकस्त पर इख़्तिताम को पहुंची। इसके साथ ही फ़िलिस्तीन के मश्रिकी हिस्से पर इस्राईल का कन्ट्रोल हो गया और बैतुल मुक़द्दस पर भी तसल्लुत क़ायम हो गया और नाजाएज़ क़ब्ज़े का यह सिलसिला अब तक है।

सरज़मीने फ़िलिस्तीन की दीनी पसमन्ज़र में कुरआन पाक की आयतें और नबी–ए–रहमत (स0अ0व0) की हदीसें इस अर्ज़े मुक़द्दस की अहमियत व मक़ाम को नुमायां करती हैं। इस सरज़मीन और इसके अतराफ़ को बाबरकत सरज़मीन होने की शहादत है। हदीस में तीन मस्जिदों में सफर करने की इजाज़त है। इनमें फ़िलिस्तीन में मौजूद मस्जिदे अक़्सा एक है। मस्जिदे अक़्सा को क़िब्ला–ए–अव्वल होने का शर्फ़ हासिल है। ख़ाना–ए–काबा की तहवील क़िब्ले से पहले रसूले ख़ुदा (अलैहिस्सलाम) और सहाबा सोलह महीने मस्जिदे अक़्सा की तरफ़ रुख़ करके नमाज़ें अदा करते रहे। अहदे ख़िलाफ़ते राशिदा में हज़रत उमर (रज़ि0) ने इसको फ़तेह किया। उस वक़्त से 1948ई0 तक बराबर मुसलमानों के कन्ट्रोल में रहा, बीच में कुछ वक़्फ़े के लिए ईसाईयों के कन्ट्रोल में रहा लेकिन सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने मुतअद्दिदद जंगे करके इसको फ़तेह कर लिया।

फ़िलिस्तीन के मक़ामाते मुक़द्दसे की बेहुरमती और

अज़मत की पामाली के पीछे सहयूनी तहरीक की गहरी नज़रयाती जड़ें काम कर रही हैं। बाएं हमा मातूबो ज़लील तरीन इस्राईलियों का फ़िलिस्तीन को पूरे तौर पर यहूदी मम्लकत बनाने का मन्सूबा है और यहां से मुसलमानों को नेस्त व नाबूद करने की कोशिश है। यही वजह है कि अपने मक़ासिद के हुसूल की ख़ातिर दरिन्दे सिफ़त इस्राईल ग़ज़्ज़ा पर बमबारी कर रहा है। घरों, इबादतगाहों, स्कूलों और अस्पतालों वग़ैरह कोई ऐसी जगह नहीं जहां यह मलऊन क़ौम ग़ज़्ज़ा को तबाह न कर रही हो। ग़ज़्ज़ा पट्टी पर अहले फ़िलिस्तीन को कुचलने में इस्राईल लगा हुआ है, हवाई हमलों के सिलसिले बराबर क़ायम हैं, बर्री फ़ौज मासूल व मज़लूम फ़िलिस्तीनियों पर बमों व दीगर आलाते हर्ब से हमले करके सैंकड़ों नहीं हज़ारों की तादाद में बेघर कर चुकी है। इस्राईली टैंक घरों में घुसकर उन पर हमले कर रहे हैं। दरिन्दगी और ज़ुल्म व बरबरियत की इन्तिहा है। हाल यह है कि लोग बेदर्दी से मारे जा रहे है। हज़ारों की तादाद में अपनी जानें क़ुर्बान कर चुके हैं। हज़ारों ऐसे हैं कि ज़िन्दगी मौत की लड़ाई उनमें जारी है। क़यामते सुग़रा का मंज़र पेश कर रहा है और दूसरी तरफ़ मुट्ठी भर निहत्थे अहले फ़िलिस्तीन नुसरते ईलाही के भरोसे पर फ़िलिस्तीन व मस्जिदे अक़्सा के तहफ़्फ़ुज़ और उसकी आज़ादी व बाज़याबी की ख़ातिर लड़ाई लड़ रह है। आलमे अरबी के मुस्लिम मोमालिक जो इस्राईल व यहूद के सियासी हलीफ़ और बर्तानवी व अमरीकी ग़ुलामी की जंजीरों में जकड़े बेग़ैरत जश्न व ऐश व इशरत मना रहे हैं। ख़ुदा महफ़ूज़ रखे ऐसे बेग़ैरतों से जिन्हें दुनियावी ज़िन्दगी के नशे ने उनकी आंखों में पर्दे डाल दिये हैं। उन्हें क्या मालूम नहीं कि इस आग के शोले हरम व ख़ैबर तक उठने के लिए तैयार हैं। अल्लाह उम्मते मुस्लिमा ख़ासकर अहले फ़िलिस्तीन की हिफ़ाज़त करे जो इस्राईल व यहूद व बर्तानिया व अमरीका की हमनवाई करने वालों से बेख़बर नहीं कि अपने यहूदी और बर्तानी व अमरीकी आक़ाओं को ख़ुश करने में लगे हुए हैं। अल्लाह तआला अहले फ़िलिस्तीन की मदद फ़रमाए और रूए ज़मीन की ज़लील तरीन क़ौम से फ़िलिस्तीन व मस्जिद अक़्सा को नजात अता फ़रमाए।

फ़िलिस्तीन लहू में डूबा हुआ है, मगर लबों पर कोई शिकवा नज़र नहीं आता है, लेकिन वहां से आने वाली हर एक तस्वीर इस बात का सुबूत है कि आलमी बिरादरी बेहिस और बेग़ैरत और मुस्लिम मोमालिक इस्राईली सफ़ाकी की दरे पर्दा हिमायती हैं, अक़वामे मुत्तहिदा के खोखले बयानात हैं, पूरी दुनिया तमाशा देख रही है, इसके बीच फ़िलिस्तीन की मज़ाहमती जमाअत (हमास) सरबुलन्द व सुर्ख़रू मैदाने जंग में हैं, एहसासे कमतरी, शिकस्त, रंज व ग़म और सामाने जंग की कमी से नाआशना मंज़िल की तलाश में ईमानी ताक़त और दीनी हमीयत के साथ मसरूफ़े अमल है। अपनी तमाम ताक़तें और कूव्वतें इसमें झोंक रही है, अल्लाह फ़तेह ज़फ़र से कामयाब करेगा। फ़तेह व नुसरत का परचम अज़्ने इलाही से लहराएगा और अक़्सा की पुकार पर लब्बैक कहने वाले अक़्सा की बाज़याबी की नवेदे जांफ़ज़ा ज़रूर सुनाएंगे, फ़िलिस्तीन और क़िब्ला–ए–अव्वल पर सलाहुद्दीन अय्यूबी वल क़स्साम के रूहानी फ़रज़न्द यहूदी बरबरियत व इस्राईली जंग व नाजाएज़ क़ब्ज़े से आज़ाद होकर फ़ातिहाना मुक़द्दस सरज़मीन में दाख़िल होंगे, मुसलमान इत्मिनान की सांस लेंगे और दुनिया सुनेगी और देखेगी और यहूदी और उसकी ज़ुर्रियत अपनी पस्पाई और ज़िल्लत के एहसास से बेमौत मर जांएगे।

मौजूदा सूरतेहाल से पूरी दुनिया के दरमियान मुसलमान शिकस्ता ख़ातिर ज़रूर हैं मगर अल्लाह की ज़ात से मायूस नहीं और न किसी तरह की कमज़ोरी व कमतरी का उन्हें एहसास है, पिछले एक साल से जारी लड़ाई तूफ़ान अल अक़्सा फ़िलिस्तीन वालों के लिए कोई माने नहीं रखता उन्होंने कितनो को खोया है, लेकिन फ़िलिस्तीन वालों के लबों पर कभी शिकवा नहीं देखा गया, बल्कि उनका जज़्बा, यक़ीन और शौक़े शहादत व फ़ौलादी अज़ाएम हमें इबरत व बसाएर की आंख खोलते हैं। इस वक़्त फ़िलिस्तीन की मज़ाहमती जमाअत हमास ने पूरी हिकमते अमली के साथ मारका तूफ़ान अल अक़्सा को जारी रखा हुआ है, अब तक की ख़बरों के मुताबिक़ हज़ारों बेघर, ज़ख़्मी और शहीद हो चुके हैं, सफ़े अव्वल की क़यादत मैदाने जहद व अमल में पेश–पेश है, उनमें वलवला, जज़्बा, शौक़े शहादत और जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह की तमन्ना सिर्फ़ ख़्याल तक महदूद नहीं, वहां का हर फ़र्द–ओ–बशर जिहाद व शहादत की तमन्ना सीने में लिये जीता है। लेकिन इस्राईली दहशतगर्दी का सिलसिला जारी है और अरब का हाल भी निहायत अफ़सोसनाक है, काश कि वह इस हक़ीक़त को समझ लेते कि

"फ़िलिस्तीनियों की तबाही सिर्फ़ उन्हीं की तबाही नहीं, बल्कि अल्लाह महफ़ूज़ रखे, यह अरबों की तबाही का पहला क़दम है जो इस्राईल ने हालात का जाएज़ा लेकर उठाया है और जिसमें बज़ाहिर अब तक कामयाब है।"

वबाले दोश है सर जिस्मे नातवां पे मगर....

मुहम्मद अरमुगान बदायूँनी नदवी

ग़ज़्ज़ा–इस्राईल जंग को अब एक साल से ज़्यादा हो चुका है। अगर देखा जाए तो दुनिया के इतिहास में दो विश्वयुद्ध के नुक़सानों का जो रिकार्ड दर्ज है। इस जंग के इन्सानियत को हैरान कर देने वाले मन्ज़रों के सामने वह रिकार्ड भी कम नज़र आता है। इस जंग की सबसे बड़ी बात यह है कि एक तरफ़ ऐसा दुश्मन है जिसके सीने में दिल है मगर वह पत्थर की सिल है, न उसके अन्दर नर्मी और लचक है और न ही इन्सानियत का एहतिराम, वह इन्सानी हाथों से ढाले हुए हथियारों के ज़रिये इन्सानों ही की तबाही व बर्बादी के दरपे है। वह ताक़त के नशे में चूर है और सुपर पॉवर ताक़तों की पुश्तपनाही के बिना पर मग़रूर है। दूसरी तरफ़ उसका मुक़ाबिल बिलाशुब्हा ज़ाहिरी तौर पर जदीद वसाएल से तही दामन है, न उसके पास खाने–पीने के सामान की फ़रावानी है और न ही ज़िन्दगी बचाने वाली ज़रूरी दवाओं ही बहुत ज़्यादा मिक़दार में हैं, न रहने को मकान है, न इलाज के लिए अस्पताल, न कुछ ख़रीदने के लिये बाज़ार है और न मन्डी, लेकिन उसके पास दो ऐसे अज़ीम शह पर हैं जिनकी बुनियाद पर वह मुस्तक़िल दुश्मन से बरसरे पैकार है और एक बसर से तवील अर्से पर मुहीत इस जंग में अब तक उसके पाया–ए–सबात में ज़रा भी लग़्ज़िश वाक़ेअ नहीं हुई है। वह दो अज़ीम ताक़ते "ईमान" और "अख़्लाक़" की ताक़ते हैं जो अपनी असरअंगेज़ी में एटमी ताक़तो से भी बढ़कर हैं, सच्ची बात यह है कि यह दोनों वह क़ीमती जौहर हैं जिनके ज़रिये से हमेशा तारीख़ में ख़ारिक़े आदत वाक़्यात पेश आते रहे हैं, वक़्त के बड़े–बड़े जाबिर और फ़िरऔन झुकने पर मजबूर हुए हैं और फ़तेह व नुसरत की एक तारीख़ रक़्म हुई है।

बिलाशुब्हा यह ग़ज़्ज़ा के जांबाज़ों के ईमान ही का करिश्मा है कि वह दुश्मन के ड्रोन हमलों, रॉकेटों, मिज़ाइलों और बमबारी वग़ैरह के बावजूद इत्मिनान से ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं, न उनके चेहरे पर ख़ौफ़ के आसार हैं और न ही उनकी हिम्मत पस्त हुई है, वह अपनी ज़िन्दगी की आख़िरी सांस तक इस अज़्म से मैदाने जंग में बरसरे पैकार हैं कि फ़तेह उन्हीं की होगी और अगर इस राह में मौत आई तो यक़ीनन उनका यह ख़ून राएगा नहीं जाएगा, इसके अलावा इसमें शुब्हा नहीं कि इसका बदला सिर्फ़ जन्नत है।

ग़ज़्ज़ा के ग़ैरतमन्द मुसलमानों की अख़्लाक़ी तस्वीर भी बहुत साफ़–सुथरी है, इससे बढ़कर अख़्लाक़ी मिसाल क्या हो सकती है कि एक तरफ़ उनका सबकुछ बर्बाद हो गया, लेकिन इसके बावजूद अब तक उन्होंने अपने हमलों और झड़पों में दुश्मन की औरतों, बच्चों और माज़ूरों को निशाना नहीं बनाया और न ही उनके क़ैदियों के साथ वहशियाना सुलूक किया बल्कि ऐसी सूरत में भी नबी (स0अ0व0) की अख़्लाक़ी तालीमात उन्हें सबसे बढ़कर अज़ीज़ हैं।

बिलाशुब्हा यह ईमान व अख़्लाक़ ही का नतीजा है कि ग़ज़्ज़ा के मज़लूमों के तक़रीबन अस्सी फ़ीसद से ज़्यादा मकान खंडहरों में तब्दील हो चुके, अस्पतालों में इलाज तो दूर की बात, उनका नाम–निशान भी मिलना मुश्किल है, पानी की एक–एक बूंद के लिए वह तरस रहे हैं, लेकिन उन सब अज़ीयतों और तकलीफ़ों के बावजूद खुश हैं और जुर्रतमन्द क़ायदीन के फ़ैसलों पर राज़ी हैं, न वहां अपने मुजाहिदीन से बरहमी का कोई तसव्वुर है, न ही अपने अज़ीज़ व रिश्तेदार की शहादत के मातम का मन्ज़र है और न ही अपनी दुनिया लुट जाने पर ज़र्रा बराबर अफ़सोस!

लेकिन उसके बिलमुक़ाबिल ज़ालिम मुल्क इस्राईल, वहां के हुक्मरां और अवाम हैं जो ज़ुल्म व सितम की आख़िरी हदें पार करने के बावजूद भी ज़िन्दगी के हक़ीक़ी लुत्फ़ से महरूम है। अगर देखा जाए तो ग़ज़्ज़ा की तबाही के मुक़ाबले में इस्राईल के अन्दर होने वाली तबाही का तनासुब कुछ भी नहीं, मगर इसके बावजूद यहां के लोगों के ऊपर रोब व हैबत तारी है। ज़ाहिरी तौर पर वह तमाम हिफ़ाज़ती तदाबीर से मालामाल हैं और फ़ौजी बरतरी भी उन्हें हासिल है, लेकिन इसके बावजूद उनके अवाम अपने लीडरों और फ़ौज पर ज़रा एतमाद

नहीं है और न ही वह उनके फ़ैसलों पर मुतमईन हैं। उनकी बुज़दिली का आलम यह है कि वह अपने कुछ सौ लोगों की मौत और कुछ सौ लोगों के बन्दी होने पर आंसू बहाते और एहतिजाज करते नहीं थकते। वाक़्या यह है कि उन्हें अपनी ज़िन्दगी हर चीज़ से ज़्यादा अज़ीज़ है और वह मौत से राहे फ़रार अख़्तियार करते हैं, इसीलिए वह खुलकर अपने सरबराहान के सामने ग़म व गुस्से का आए दिन इज़्हार करते हैं और जंगबन्दी का पुरज़ोर मुताल्बा करते हैं, मगर अलमिया यह है कि आलमी बिसात के सियासी शातिर ऐसा कभी न चाहेंगे कि यह जंग बन्द हो, उनकी आमदनी के ज़राए ठप पड़ें और मुसलमानों की तबाही का सिलसिला मौक़ूफ़ हो।

दूसरी तरफ़ ग़ज़्ज़ा के जियालों ने यह भी क़सम खा ली है कि चाहे पूरा ग़ज़्ज़ा खन्डहर में तब्दील हो जाए, चाहे उनके सब सूरमा और उनका हर–हर शहरी इस राहे हक़ में शहीद हो जाए लेकिन वह अपने ख़ून के आख़िरी क़तरे तक क़िब्ला–ए–अव्वल और सरज़मीने अम्बिया की हिफ़ाज़त के लिए सीना सिपर रहेंगे। अब उन्हें जंग बन्दी सिर्फ़ एक ही शर्त पर मन्ज़ूर है और वह है अर्ज़े मुक़द्दस की हुदूद से यहूदियों का मुकम्मल निकाला!

अहले ग़ज़्ज़ा का यही वह ज़बरदस्त जज़्बा और हिमालयाई अज़्म है जिसने आलमी ताक़तों को यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि अब उन्हें अपने नापाक अज़ायम में कामयाबी मिलना मुश्किल है और वाक़्या यह है कि अगर ग़ज्ज़ा के यह कोहे इस्तिक़ामत इसी तरह हायल रहे तो फिर शायद ग्रेटर इस्राईल का ख़्वाब कभी शर्मिन्दा–ए–ताबीर न हो सके।

इसमें शुब्हा नहीं कि ग़ज़्ज़ा के बाहिम्मत व बाहौसला अहले ईमान एक तारीख़ रक़म कर रहे हैं और पूरी उम्मते मुस्लिमा की जानिब से फ़र्ज़े किफ़ाया को बहुस्ने ख़ूबी अदा कर रहे हैं। हक़ीक़त यह है कि उन्होंने इस वक़्त पूरी उम्मते मुस्लिमा को एक ऐसे दोराहे पर लाकर खड़ा कर दिया है, जिसका एक रास्ता इस उम्मत के उरूज की मंज़िलें तय करता है और दूसरा रास्ता उसको ज़वाल व इदबार की अमीक़ खाइयों में ले जाता है। मसला सिर्फ़ ख़लीजी मोमालिक या हिजाज़े मुक़द्दस का नहीं बल्कि अगर देखा जाए तो पूरी उम्मते मुस्लिमा का है। इस हक़ीक़त से इनकार नहीं कि मुस्लिम मुल्क ग़फ़लत का शिकार हैं, ऐश व इशरत में मस्त हैं और अपने फ़र्ज़े मन्सबी से गाफ़िल हैं, न उन्हें हरमैन शरीफ़ैन के तक़द्दुस और उसकी हिफ़ाज़त का ख़्याल है, न ही उम्मते मुस्लिमा की ज़बूंहाली पर अफ़सोस और न ही अपने वक़ार व मेयार और मुस्तक़बिल के लिए फ़िक्रमन्दी का एहसास।

लेकिन अगर ग़ौर किया जाए तो उमूमी तौर पर इस वक़्त पूरी उम्मत की यही सूरतेहाल है, इस वक़्त हरएक अपनी धुन में मस्त है। हर एक के ऊपर दुनिया तलबी का भूत सवार है और हर एक अपने हिसार में दादे ऐश दे रहा है। शायद हम यह समझते हैं कि ग़ज़्ज़ा के लिए आवाज़ उठाने का फ़र्ज़ सिर्फ़ अरबों का है, शायद हम यह समझते हैं कि ग़ज़्ज़ा के लिए अपनी ज़िन्दगी की आसानियों को कुर्बान करने का हक़ सिर्फ़ आलमे इस्लाम का है, शायद हम यह समझते हैं कि ग़ज़्ज़ा के लिए अपनी बेचैनी के इज़्हार का तरीक़ा सिर्फ़ आलमी ताक़तों और अरबों को बुरा–भला कहने में है।

लेकिन क्या कभी हमारे तर्ज़े ज़िन्दगी से यह इज़हार हुआ कि हमें भी ग़ज़्ज़ा के मज़लूमों का दर्द है? क्या कभी हमारी महफ़िलों में इस कसक को महसूस किया गया? क्या कभी हमारी दाद–ओ–दहिश में कोई कमी वाक़ेअ हुई? क्या कभी हमने ख़ाक़ व ख़ून के इस मंज़र को देखकर अपनी ज़िन्दगी को तब्दील करने की कोशिश की? क्या हमने अपने मज़लूम भाइयों के लिए दर्द व कर्ब से डूबी हुई अलहाह व ज़ारी का एहतिमाम किया? हक़ तो यह था कि दुनिया के हर ख़ित्ते में जहां मुसलमान बसते हैं, उनके चेहरों पर एक ऐसी कैफ़ियत रौनुमा होनी चाहिए थी जिसको देखकर हर इन्सान यह कहने पर मजबूर हो जाता कि उनके नज़दीक क़िब्ला–ए–अव्वल, हरमैन शरीफ़ैन और अपने मोमिन भाइयों की जान की क़ीमत हर चीज़ से ज़्यादा अज़ीज़ है। याद रखें! अगर हम यह समझते हैं कि ग़ज़्ज़ा की तबाही सिर्फ़ ग़ज़्ज़ा या अरबों की तबाही है तो हम बहुत बड़े धोखे में हैं, वाक़्या यह है कि उन्हीं की क़िस्मत से हमारी क़िस्मत वाबस्ता है।

हदीस में आता है कि आप (स0अ0व0) जब ग़ज़्वा–ए–तबूक से वापस आ रहे थे तो आप (स0अ0व0) ने माज़ूरीन से मुताल्लिक़ इरशाद फ़रमाया कि उन्हें भी अपनी नेक नियती और जज़्बा–ए–सादिक़ की बुनियाद पर अज्र अता हुआ है। क्या बईद है कि अगर हम भी यही सोज़े दरूं पैदा कर लें तो हमारा शुमार भी ग़ज़्ज़ा के उन्हीं जांबाज़ों में हो। ....

क्या हमास का क़दम ख़ुदकुशी के बराबर था?

मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

इस बात से इनकार नहीं कि बग़ैर तैयारी और बग़ैर जंग के साधनों के मैदाने जंग में कूदना ख़ुद को मौत के मुंह में डालने के बराबर है लेकिन!

......लेकिन दिल पर हाथ रखकर बताना कि क्या हमास किसी महाज़ पर कमज़ोर पड़े हैं?

क्या हमास ने किसी मौक़े पर राहे फ़रार अख़्तियार की है?

क्या हमास के क़ायदीन नर्म बिस्तरों और आरामदेह कमरों में बैठे रहे?

क्या हमास क़यादत का अपना ख़ानदान जंग से दूर ऐश करता रहा?

वसाएल से ज़्यादा हमारे लिए ईमान की तैयारी अहमियत रखती है, यही वह ईमान है जिसके दम पर मुट्ठी भर मुजाहिदीन ने कई बार बड़े–बड़े लश्करों को शिकस्त दी थी। यही वह ईमान है जिसके ग़ल्बे की गारन्टी क़ुरआन मजीद ने ली है।

याद कीजिए अरब–इस्राईल जंग को, अरबों के पास न साधनों की कमी थी न फ़ौजी लश्कर की, उस वक़्त इस्राई को यह ख़ौफ़ था कि इस जंग के साथ ही इसका वजूद भी समेट दिया जाएगा, लेकिन अरब फ़ौज को जिस शिकस्त का सामना करना पड़ा, इसने वाज़ेह कर दिया कि मामला सिर्फ़ आलात व वसाएल का नहीं, मामला ईमान की कमज़ोरी का था।

ज़रा सोचिए! इस्राईल जैसा पॉवरफुल मुल्क जिसका दावा था कि एक हफ़्ते के अन्दर वह हमास को नेस्त–ओ–नाबूद कर देगा, उसके डिफ़ेंस सिस्टम की मिसाल दी जाती थी, लेकिन हमास के तूफ़ान के सामने उसका सारा निज़ामे दिफ़ाअ (रक्षा तन्त्र) धरा रह गया, न उसके साधन काम आए, न उसकी इन्टेलिजेंस को हवा लगी।

एक साल से ज़्यादा का अर्सा हो गया लेकिन हमास ने आजतक घुटने नहीं टेके, किसी भी मक़ाम पर उसके पाया–ए–सिबात में लग़्ज़िश नहीं, ख़ौफ़ व हरास से उनका दूर का भी वास्ता नहीं जबकि इस्राईल हर–हर क़दम पर लड़खड़ा रहा है, उसके फ़ौजी डाइपर पहनने पर मजबूर हैं। ख़ौफ़ व हरास के आलम में अपने ही साथियों पर गोलियां बरसा रहे हैं, ज़हनी तवाज़ुन बिगड़ चुका है और जंग से भागने के लिए झूठ बहाने पेश किये जा रहे हैं।

एक तरफ़ अगर हमास का एक क़ायद शहीद हुआ तो दूसरे ने उसकी जगह ले ली, दूसरा शहीद हुआ तो तीसरा सीना सिपर हो चुका है और अगर तीसरे की क़िस्मत में भी शहादत होगी तो इंशाअल्लाह चौथा क़ायद मज़ीद जोश व ताक़त के साथ सामने आयेगा, जबकि दूसरी तरफ़ इस्राईल हर आन उस जंग से फ़रार चाहता है, वह ख़ुद को मज़बूत दिखाने के लिए स्वांग रचता है, दुनियाभर से ताक़त की भीख मांगता है।

ज़रा सियासत के माहिरीन से पूछो, जंगों की तारीख़ के सफ़े पलट कर देखो, मैदाने कारसाज़ के सूरमाओं से पूछो, तो जानोगे कि वसाएल सिर्फ़ वसाएल हैं और वसाएल ही की हद तक हैं, वह हक़ीक़त नहीं हैं, हक़ीक़ी तैयारी वह जज़्ब–ए–सादिक़ है जो मैदाने जंग में दिल को थामे रखता है, वह फ़ौलादी जोश है जो क़दमों को फिसलने से रोकता है, सीने में जलने वाली वह आग है जो दुश्मन के नख़्ल तमन्ना को ख़ाकस्तर करने के लिए बेक़रार रहती है।

हमास की जंगी तैयारी ने एक इतिहास बनाया है, एक ऐसी मिसाल पेश की है जिससे तारीख़े इन्सानियत का दामन बिल्कुल कोरा है।

क्या आपने कभी किसी ऐसी जंग के बारे में सुना है जिसकी तैयारी पूरे मुल्क ने एक साथ की हो?

क्या कभी सुना है कि कोई माँ अपनी औलाद को

ख़ुद तैयार करके जंग के मैदान तक ले जाती है?

क्या कभी ऐसा हुआ है कि लाशों के ढेर और मजलूमों के बहते हुए ख़ून को देखकर रगों में ख़ून की रफ़्तार तेज़ हो गई हो और रिक़्क़त में उबाल आ गया हो?

जंगों की तारीख़ में फ़ख़्रिया तौर पर लिखा जाएगा कि इस जंग के लिए हमास ने जो तैयारी की उसने अक़्लों को हैरान कर दिया, अन्दाज़ों को ग़लत साबित कर दिया और एक ऐसी मिसाल पेश कर दी जिसने हज़ार बार सोचने पर मजबूर कर दिया...!!

यक़ीनन ग़ज़्ज़ा तबाह हो चुका है, यक़ीनन पूरा ग़ज़्ज़ा खंडहर में तब्दील हो चुका है, यक़ीनन लाखों जाने काम आ चुकी हैं, यक़ीनन हमास के बहुत से मुजाहिदीन जामे शहादत को नोश कर चुके हैं, लेकिन!

.....लेकिन एक साल के बाद भी क्या इस्राईल ने अपना हदफ़ पूरा कर लिया?

क्या इस्राईल हमास को अपनी शर्तों पर झुका सका? क्या इस्राईल ने अपने क़ैदियों को रिहा करा लिया?

आज़ ग़ज़्ज़ा में बारूद के बादल छाये हैं, गोलियों और तोपों से पूरी फ़िज़ा ज़हरआलूद है, चीख़ों और सिसकियों में दम घुट रहा है, खाने—पीने की क़िल्लत है, दवाइयों इत्यादि की कमी है, बुनियादें ज़रूरतें भी फ़राहम नहीं लेकिन!

........लेकिन क्या किसी भी बाशिन्दें ने वालेला मचाया?

क्या किसी ने अपनी क़यादत को लान—तान किया?

क्या किसी की ज़बान से नाज़ेबा अल्फ़ाज़ अदा हुए?

क्या किसी ने झुकने की, हथियार डालने की, मुसालहत करने की, इस्राईल को तस्लीम करने की बात कही...?

ताज्जुब सद ताज्जुब! जिनके घर तबाह हो गए, जिनका मुल्क उजड़ गया, जिनके अज़ीज़ शहीद हो गए, जिनके बच्चे यतीम और औरतें बेवा हो गईं, उनकी ज़बान पर एक हर्फ़ शिकायत का नहीं, वह अपनी क़यादत से ख़ुश, हमास के क़दम से मुतमईन और उसकी तैयारी पर पुर सुकून हैं और हम हज़ारों मील दूर अपने घरों में आराम से बैठकर यह फ़रमान जारी कर रहे हैं कि हमास ने ख़ुद को हलाकत में डाला है।

ग़ज़्ज़ा तबाह हो गया लेकिन वहां ईमान की बादेबहारी है, अल्लाहु अकबर की बुलन्द सदाएं हैं, क़ुरआन की तिलावत और नमाज़ों का एहतिमाम है, वहां गुनाहे कबीरा नहीं होते, वहां शराब नहीं पी जाती, वहां ज़िना नहीं किया जाता, वहां चोरी नहीं की जाती, वहां गालियां नहीं दी जाती, वहां धोखा और ग़द्दारी नहीं पायी जाती, वहां सिर्फ़ शहादत की बातें और मस्जिदे अक़्सा की बाज़याबी की दुआएं हैं, वहां ईमान पर ख़ात्मे की फ़िक्र है और ख़ुद को शफ़ाअत नबी (स0अ0व0) का अहल बनाने की जद्दोजहद है...

क्या हमास की तैयारी काफ़ी नहीं???

दूसरी तरफ़ इस्राईल है, न वसाएल की कमी है, न आलाते हब्र की कोई फ़िक्र, पूरी मग़्रिबी दुनिया इसके दोश—ब—दोश है और पूरा आलमे अरब इसका पुश्त पनाह है, लेकिन इस्राईल की सड़कों पर हू का आलम है, दहशत की वजह से नींद नहीं आती, गोलियां न खाएं तो रात काटना मुश्किल है, ख़तरे का सायरन इस क़द्र बजता है कि वह नफ़्सियाती मरीज़ हो चुके हैं, उनका ज़्यादातर वक़्त बैंकरों में गुज़र रहा है और मुस्तक़बिल को लेकर व सख़्त मायूसी और अंधियारे में डूबे हैं।

हमास का एक बुनियादी हदफ़ यह था कि दुनिया यह जान ले कि फ़िलिस्तीन का मसला क़ौमी या इलाक़ाई मसला नहीं है बल्कि यह आलमी मसला है, पूरी इन्सानियत का मसला है और इस्राईल सिर्फ़ फ़िलिस्तीन का मुजरिम नहीं है बल्कि व पूरी इन्सानियत का मुजरिम है।

आज दुनिया भर में इस्राईल को नफ़रत की निगाह से देखा जा रहा है, इसके प्रोडक्ट्स का बायकाट किया जा रहा है, उसको ज़ालिम व आलमी दहशतगर्द गिना जा रहा है...जबकि पूरी दुनिया में हमास के लिए हमदर्दियां पेश की जा रही हैं, उसकी हिमायत में रैलियां निकाली जा रही हैं, बयानात जारी हो रहे हैं और पूरी दुनिया इसको आलमी मसले के तौर पर देख रही है।

ख़ुदा की क़सम! हमास अपने मक़सद में कामयाब!

अपने मिशन में कामयाब! अपनी तैयारियों में कामयाब और इस्राईल हर—हर महाज़ पर ज़लील व नाकाम!

फ़ैसला कुन महाज़

"हाल ही में इन्टरनेशनल कोर्ट ऑफ़ जस्टिस ने यह फ़ैसला दिया है कि इस्राईल एक नाजाएज़ रियासत (देश) है, इसके अलावा संयुक्त राष्ट्र संघ की ट्रीटी भी आ चुकी हैं, लेकिन इसके बावजूद भी इस्राईल की धांधली जारी है और वह हर रोज़ ग़ाज़ा के अस्पतालों, स्कूलों, औरतों और बच्चों पर बमबारी कर रहा है और लगातार ज़ुल्म व सितम के पहाड़ तोड़ रहा है। इन्तिहाई अफ़सोस की बात है कि मराकश से लेकर इन्डोनेशिया तक इस्लामी देशों की एक चेन है, लेकिन वह सब बड़ी ख़ामोशी के साथ यह तमाशा देख रहे हैं और उनकी निगाहों के सामने औरतों, बच्चों और नवजात शिशुओं को निशाना बनाया जा रहा है, हैरत है कि किसी के अन्दर अमली तौर पर इस ज़ुल्म व जबर के ख़िलाफ़ कोई एक्शन लेने की हिम्मत नहीं है, यहां तक कि ज़बान से निंदा करने की भी उन्हें तौफ़ीक़ नहीं और उसकी सबसे बड़ी वजह यह है कि वह सब ज़हनी तौर पर ग़ुलाम हैं।

यह भी एक हक़ीक़त है कि अगर आप ग़ौर करें तो मुसलमान कम्यूनिटी की हैसियत से कभी भी इतना दौलतमन्द और साधन सम्पन्न नहीं रहा जितना कि आज है। तेल की दौलत उनके पास है, गैस की दौलत उनके पास है और दुनिया की हर दौलत उनके पास है, बाज़फ़ोरस उनके पास है, ख़लीजे अदन उनके पास है, जबलुत्तारिक़ उनके पास है, अबनाए हरमज़ उनके पास है, दुनिया के तमाम महत्वपूर्ण रास्ते और नाके जिनके ज़रिये दुनिया का नातक़ा बन्द किया जा सकता है, वह सब उनके पास है, लेकिन अफ़सोस है कि उसके बावजूद वह ग़ुलामी की ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं और उसी ग़ुलामी का नतीजा है कि चूंकि इस्राईल को अमरीकी सहयोग प्राप्त है, इसलिए उसके ख़िलाफ़ कोई एक जुम्ला बोलना भी उसके लिए क़यामत हो गया है, बजाए इसके कि वह ग़ाज़ा के मज़लूमों की मदद करें। बल्कि ज़ुल्म की इन्तिहा तो यह है कि मुस्लिम देशों में उन लोगों को हिरासत में लिया जा रहा है जो फ़िलिस्तीन की आज़ादी का नारा लगाते हैं। ज़ाहिर है यह सब मग़रिब की उसी ग़ुलामी का नतीजा है जिसने हमें धोखा देकर तक़सीम कर दिया है। इससे इन्कार नहीं कि ख़िलाफ़ते उस्मानिया की अपनी बहुत सी कमज़ोरियां भी थीं, लेकिन ब्रिटेन ने इसके ख़िलाफ़ यह गहरी साज़िश की कि उसने अरब उलेमाओं को बहकाया और यह समझाया कि इस्लाम के ठेकेदार आप हैं, लिहाज़ा ख़िलाफ़त के मुस्तहिक़ आप हैं, इसीलिए उस वक़्त के बड़े–बड़े उलेमा उस धोखे में आ गए और उन्होंने यह समझा कि अगर हमने ख़िलाफ़ते उस्मानिया से अलगाव किया तो ब्रिटेन हमें एक अलग ख़िलाफ़त क़ायम करके देगा, लेकिन जब दूसरा विश्वयुद्ध हुआ और उसमें ब्रिटेन को विजय प्राप्त हुई तो उसने वादा ख़िलाफ़ी की और सबको छोटी–छोटी रियासतों में बांट दिया और उन सबको अपना अधीन भी बना लिया।

मेरा दिल यह कहता है कि इस वक़्त फ़िलिस्तीन का यह एक ऐसा ऐतिहासिक लम्हा है जिसको अंग्रेज़ी ज़बान में "नाउ ऑर नेवर" कहा जाता है, अगर मुसलमान उम्मत ने इस मौक़े से फ़ायदा उठा लिया तो वह हमेशा के लिए ग़ुलामी का बोझ उतार सकती है और ग़ुलामी का ख़ात्मा मुमकिन है, वरना याद रहे कि अगर इस्राईल अपने नापाक इरादों में कामयाब हो गया तो फिर ग्रेटर इस्राईल का मन्सूबा पूरा होकर रहेगा और उस वक़्त तमाम छोटी–छोटी रियासतों को वह हज़म कर जाएगा, इसलिए जो रियासतें इस वक़्त अपनी अय्याशियों में मगन हैं, उनको होश में आने की ज़रूरत है।

मौलाना मुफ़्ती तक़ी उस्मानी मदज़िल्लहु

R.N.I. No.
UPHIN/2009/30527

Monthly
ARAFAT KIRAN
Raebareli

Issue: 11 ❃ November 2024 ❃ Volume: 16

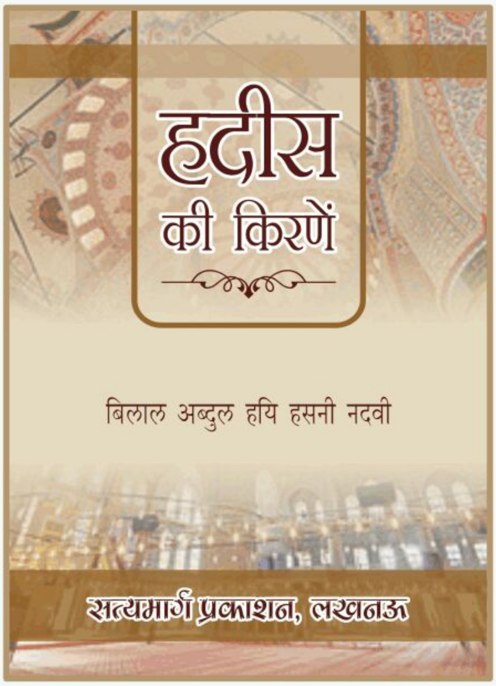

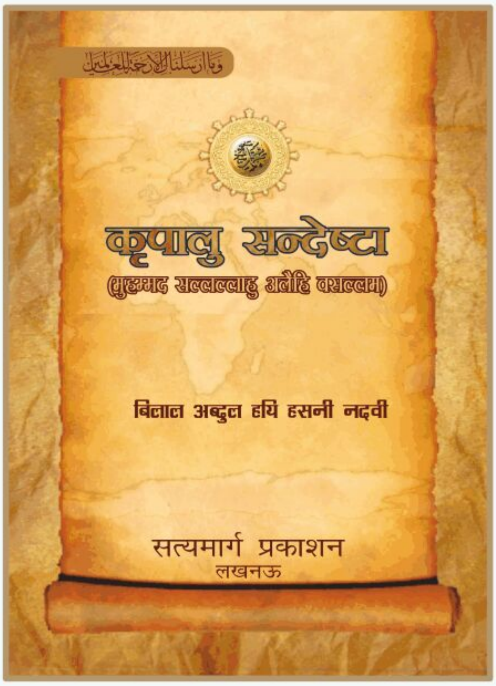

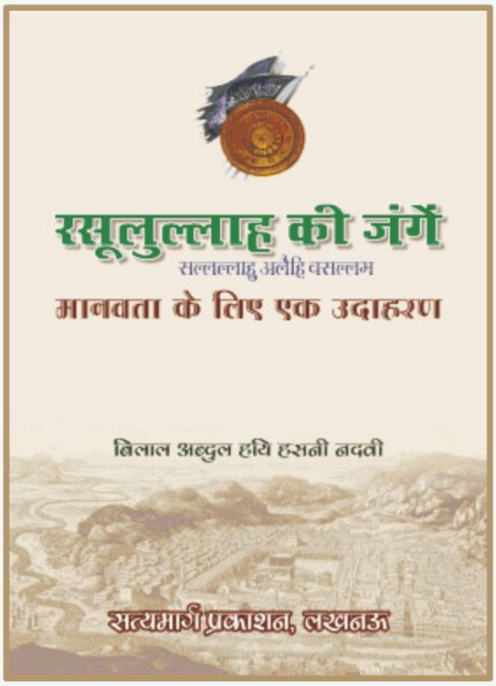

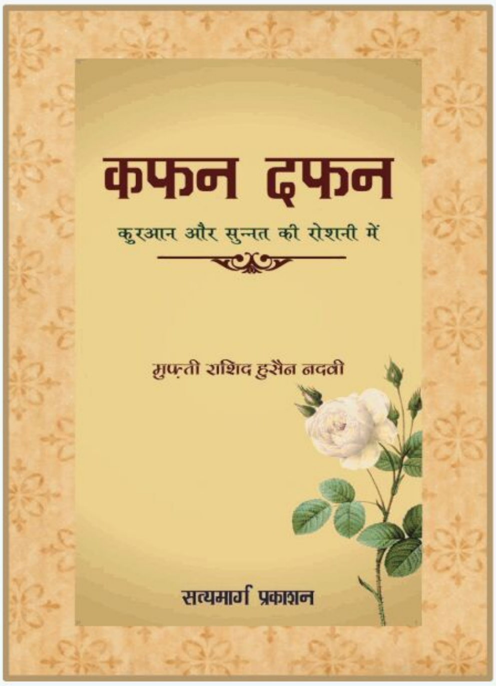

Editor: Bilal Abdul Hai Hasani Nadwi
MARKAZUL IMAM ABIL HASAN AL-NADWI
Dare Arafat, Takiya Kalan, Raebareli, U.P.
Mobile:9565271812
E-Mail: markazulimam@gmail.com
www.abulhasanalinadwi.org

Printed & Published by: Mohammad Hasan Nadwi
On Behalf of: Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi
Printed at S.A. Offset Printers, Masjid ke peeche,Phatak
Abdullah Khan, Sabzi Mandi, Station Road, Raebareli, U.P.